मुरधर म्हारो देस

कवि कानदान 'कल्पित'
(झोरड़ा वाला)

विकास प्रकाशन, बीकानेर

राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी बीकानेर री पाडुलिपि प्रकाशन
सहायता योजना में मिलियै आशिक आर्थिक अनुदान पेटै प्रकाशित

सस्करण 2004

प्रकाशक विकास प्रकाशन
4–चौधरी क्वार्टर्स स्टेडियम रोड बीकानेर
फोन – 2541508

आवरण रमेश शर्मा

टाइप–सैटिंग आरती–पूजा भीनासर
फोन – 2273900

मुद्रक कल्याणी प्रिंटर्स
मालगोदाम रोड बीकानेर
फोन – 2526890

मूल्य रु 100/–

Murdhar Mharo Des Kandan Kalpit Rs 100 ([illegible]

समर्पण

श्री हरिराम बाबा, झोरडा

नाथ तिहारे नाम री, किण विध करू बखाण।

काळा मुख ताळा जडै, दै मुरदा नै प्राण।।

कान्है उर राधा बसै, राधा रै उर श्याम।

हरदम मो हिरदै बसै, यू बाबो हरिराम।।

पूजनीक अवतारी,

म्हारा इष्टदेव श्री हरिराम बाबा,

झोरडा नै सादर समरपित।

कानदान कल्पित

कविता री सतरगी पिछाण

कानदान 'कल्पित' उजास रा आगीवाण कवि है। राजस्थान में अर राजस्थान रै बारै जठै-जठै राजस्थानी समाज रैवै कानदान री कवितावा री माग बरोबर घणी रैवै। माझल रात सू लेय'र झाझरकै ताई लोग जे अेक ई कवि री कवितावा सुण रैया हुवै अर फेर भी धाप नीं आय रैयी व्है जो उण कवि रो अेक ही नाव हुय सकै - कानदान 'कल्पित'। मुरधर रै मीठै गुटक मतीरै जिसी कवितावा, कनक-काकडी रै स्वाद जिसी कवितावा, सावण री झडिया बिच्चै बरसात री घटा जिसी कवितावा अर लूम्बा-झूम्बा ढोला रै ढमकै आयोडै फागण री रगत जिसी कवितावा सुणता रैवो - सुणता रैवो। नीं तो स्रोता आखता हुवै अर नीं कवि थाकै। रात धुळ जावै पण तिरस बणी रैवै। कानदान कणाई लोगा नै हसावै तो कणाई देसप्रेम रै भावा रो सचार झबळका देवै कणाई सिणगार रा साज सजावै तो कणाई मौसम री मनवारा करै पण जद वै 'सीखडली' उगेरै तो बाईसा रा नैण ई नहीं, स्रोतावा रा नैण भी डब-डब भर जावै। कानदान कल्पित कविता रा जादूगर है। जादू रो असर तो फेर भी थोडी जेज ही रैवै पण कविता रो असर अखी हुय जावै।

कानदान म्हारा ब्हौत पुराणा साथी है - चाळीस बरसा सू ई बेसी काव्य-परकमा रा साथी। म्हैं वा री कवितावा रा केई रग देखिया है। माटी री मरजाद रै गीरवै अर रातै-मातै देसप्रेम रा रग सिणगार रै सजोग-विजोग रा रग, कुदरत री आरती उतारण वाळी मौसम री मनवारा रा रग, ओळ्यू रै लसरका अर सुपना री बणगट रा रग, चेतना रा चूठिया चमकावण वाळै लोक-जागरण रा रग व्यग्य अर हास्य री भेळप में ऊडा घाव करण वाळा रग अर करुणा रा दरियाव बैवावण वाळा सातरा रग। रग रग रग। कविता री सतरगी पिछाण करणी व्है सवदा रै आभै में इन्दरधनुस देखणो व्है अर माय री माय इमरत रा घूट पीवणा व्है तो पाठक इण सकळन नै पढिया बिना कोनी रैय सकै।

पाठक सोच सकै कै जद म्हैं इतरो अभिभूत होय'र लिख रैयो हू तो फेर सकळन री कवितावा रै गुण-दोस री पडताळ किया कर सकूला। कवितावा कोई लाडू तो है नहीं कै उण री हरेक कोर मीठी'ज हुवै। तो गुणा रो बखाण करण सू पैला की कमिया कानी पैला सू ई इसारो करणो ठीक रैवैला। पण अै कमिया सिरफ इण कारण बताय रैयो हू जिणसू कवितावा रै फुठरापै नै निजर नीं लाग जावै। अेक कमी तो आ है कै कानदान आज ताईं आपरी कवितावा नै पोथी रो रूप क्यू नीं दियो। जै पोथी रूप अै कवितावा सामीं आय जावती तो आज आखै भारत रै राजस्थानी समाज रै घरा में इया कवितावा री गूज होंवती। आळस

री आ आदत कविता रै सागै अन्याय करण वाळी अखरणजोग बात है। दूजी कमी अेक ई ढाळै री कवितावा में भावा रै दुसरावण री है, जकी मौलिक्ता नै रगनोळिया विना कोनी रैवै अर तीजी कमी भावा रै वेग में भासा-पख माथै कीं कम ध्यान देवण री है। गीत में तो वाणी रै उतार-चढाव सू मात्रावाँ में या लय-प्रास में जे कीं ऊच-नीच हुय जावै तो निभ जाव पण माईडा छपियोडा सबद तो सोनै री ताकडी में तुलियोडा हुया करै - राई भर ई मात्रा-दोस हुवै तो अखरण लाग जावै। टूकै में कमिया रो सकेत करण रै पछै म्हैं म्हारी सागी रगत माथै आवणो चावू।

कानदान नै उपमावा अर अनुप्रास री छटा री कोरणी में महारत है। अनुप्रासा री लडिया यू लागै जाणै कविता रै हार में पळपळाट करता मोती जडियोडा व्है। नमूनै सारू जायजो लेवो सूरज सोनै रो ऊग्यो सातरो / मातभीम पर सीस चढा कर मरणों ही मगळ जाणै / धमक घुरै धमसाण जठै / जुगा सु जलम-जलम रो साथ तोड मत प्रीत पुराणी है / चन्दै में चमक चादणी ज्यू / सैंस किरण सोन रो सूरज ऊगियो अर सासा री सरगम पर कोई लोटै साप विसैला है। इसो निरवाळो इसो जडाऊ वर्ण-विन्यास कवितावा में जागा-जागा विखरयोडो मिलैला।

रसभीणी उपमावा रो तो काई कैणो। मन में थिर वासो करणवाळी रूडी-रूपाळी उपमावा रा नमूना कायर हिरणी सी मुड-मुड देख / धरती-अम्बर रेखा रै बीच सोवन सूरज डूब गियो / मागडली खितिज रेखा पीळै परभात की सी / नींबू री फाड पळका कवन कटोरी / ढळती गढ रै झरोखै बैठी रातडली / हिडदै रै पडदै माथै धुपळा चितराम छाया / सोनै रो झोळ उतरता ही ठाकुरजी पीतळ रळ जासी / पीळो मुख पडियो पेचै सो अर भूखा मरता मिनखा री पसळिया चमकै ओ आद उपमावा ताजगी अर अछूतै बखाण री अैनाण है।

कानदान कल्पित री कवितावा में ध्वन्यात्मक्ता री बानगी भी पढणजोग है जिया खळ-खळ नद नीर खळका में, पळ-पळ कर बीज पळका में / झट्क झाडबड रट्क सूड पर बोलण दै मच्चीडो रे वेली धीरो रे निरै ताळ री झाटक-राटक उट्ठण दै हब्बीडो रे वेली धीरो रे अर रिमझिम बिरखा रुत आई झीणी पायल झणकाती, पैडी-पैडी पग धरती मंडी-मंडी मुस्काती आद में पाठक नै यू लागै जाणै अै सबद उण रै हिडदै में ई झणकार कर रैया हुवै।

मातभीम रै गीरबै अर त्याग बलिदान री कवितावा माय की सिरैनाव रचनावा हे मुरधर म्हारो देस मुरधर रा मोती अर आजादी रा रुखवाळा सूता मत रीज्यो रे। अछूतै अर घणमोलै सिणगार अर सजोग-विजोग रै दरसावा सारू नामी कवितावा हैं चन्दर-चकोरी कोयलडी क्यू बोली मिल्या दो पछीडा अणजाण अर म्हू भूल्या नहीं भुलाऊला। इणी भात कुदरत री आरती उतारण वाळी कवितावा में वखाणजोग है 'महिनो फागण रो अर 'मास बरसाळो आयो रे। ओळ्यू रै लसरका रा भाव देखणा व्है तो उडीकू 'ढळगी गढ रै झरोखा अर ओळू री घडिया में कवितावा में मिलैला। जागरण रै सनेसै वाळी कीं कवितावा है चेत मानखा जाग-जाग अर थू बोल तो सरी। व्यग्य अर हास्य सारू चावी कवितावा

में 'पडदे रै भीतर, 'म्हाकी मानो तो गाधीजी' अर सुणज्यो नेताजी' आज री स्थितिया रा तार-तार खोल'र मायली छिव दरसावण वाळी है। अर छेकड में आवै है करुण रस। आखे राजस्थानी साहित्य में 'सीखडली' रै मुकाबलै कम ही कवितावा मिलैला।

कानदान कल्पित री कवितावा में उजास रै आगण माय सवदा रो महारास देखण-परखण नै मिलै। दीवाळी री जगमग जोत री अखड लौ झिलमिलै तो सूरज री आरती उतारण सारू चेतना रै गोखा नै खोलण री जुगत भी सामीं आवै। नानूराम सस्कर्ता रै सवदा रो सायरो लेऊ तो म्हैं कैय सकू कै अै कवितावा कनक रै कटोरै में केसर रै घोळ जिसी है। इया में सवेदना री सखरी अर सावठी जातरा है, अनुभवा री गैराई है अर वगत रै सागै वतळ करण री खिमता है। कानदान अेक तरै रा अवधूत कवि है - मस्त-मलदर अर निरवाळी धुन रा 'फक्कड' कवि।

आज राजस्थानी भासा रै नाव माथै घणा ई धजाधारी सामैं आय रैया है पण कवितावा रै पेटै लाखू लोगा नै राजस्थानी सू जोडण वाळा कवि आगळ्या माथै गिणिया जाय सकै। म्हानै इण बात रो गीरबो होवणो चाईजे कै ई विरला कविया माय कानदान कल्पित री ओपती अर ठावी ठौड है।

कानदान री कवितावा रा कू-कू पगलिया अबै नुंवै भावबोध नै अंगेजण कानी जाय रैया है - इण वात री म्हनै खुसी है। 'आभो सींवा ही किया री ई ओळ्यू सागै म्हैं म्हारी वात नै विराम देवूला -

हिवडै री पौळ माथै / सवाला री भीड है
दरद असीम तन / काळजै री पीड है
कण्ठा पर करोती चालै / सैवा ही किया
फाटै गामै कारी, आभो सींवा ही किया

अन्तरदीठ रै उजाळै अर आत्मा रै रस रो ओ कवि चिरजीव हुय जावै - इसी म्हारी कामना है।

भवानीशकर व्यास 'विनोद'
1-स-9 पवनपुरी बीकानेर

कल्पित तणी अरदास

सुरसत मा अर गुरु क्रिपा दो सबदा रो मेळ।
सींग-पूछ बिन बळद नैं, मिनखा दीनो मेळ।।
जिण में थारो वास नीं विण री मिटै न तास।
मिनखा जूणी पाय कर, कात्यौ पिंज्यो कपास।।
मा चरणा सरणा पड्यो हिरदै करो उजास।
आरत-बाणी सामळो कल्पित तणी अरदास।।

मुरधर री सुरगी धरती पर परभाते मळमळाट करतो थको रोजाना सोनै रो सूरज ऊगै अर आथवै बिणी सोनलिया धोरा-धरती पर पाबूजी-हरबूजी रामदेवजी, श्री करणी माता अर श्री हरीरामजी महाराज आद लोक-देवी-देवता हुया जका रै पाण मुरधर देस रो माण समन्दरा पार पूग्यो। आ लोक-देवी-देवतावा में श्री हरीरामजी महाराज रो जलम वि स १६५६ में गाव मोरडे री पवित्तर धरती पर हुयो, जिण रो नाव चोताळै में धावो-ठावो है। म्हू अपणै-आप नै घणो घणो भागसाळी समझू कै इणी झोरडा गाव री मखमली बेळू रेत में म्हारो भी बचपणो बीत्यो।

इण धोरा-धर माटी री झीणी-झीणी मटकार में रुत-रुत पर गाईजण वाळा गीता री मुधरी-मुधरी झणकार सावण-भादवै में कम्मी-झाडवड री रणकार अर रण-आगण में सावत-सूरा री ललकार लियोडा गीत म्हारै अतस मन सू मुखरित हुया।

खेता में किरसाणा री उफणती मस्ती में तेजै वाळी तान, अळगोजा री सुरीली गूज में मुरधर रै मोत्या रो गुणगाण म्हारी पोथी रै गीता री असली ओळखाण है। जका गीता नै म्हू देस-विदेस रै खूणै-खूणै में झूम-झूम कर गाया है, पण पोथी रूप में पैली बार छपाया है।

मुरधर म्हारो देस' नाव रै गीता रो ओ गजरो आपरै हाथा में सूपता म्हनै घणो हरख-उमाव हुय रियो है, जिण में खाटा-मीठा चरका-फरका भात-भात रा केई परकार रा चरपरा सुवाद हैं। आपनै मन-पसद आसी, आप लागा सू म्हू ऐडी आसा राखू।

म्हू राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी अर (कायकारी) सस्था-सचिव श्री पृथ्वीराजजी रो रिणी हू, जिण रै सैयोग सू म्हारी आ पोथी छपी।

म्हारी पोथी रा प्रस्तावना-लिखारा श्री भवानीशकर व्यास 'विनोद' म्हारै बचपण रा साथी गौरीशकरजी मधुकर, पोथी रा प्रकाशक बृजमोहनजी पारीक शिष्य शकरसिंह राजपुरोहित अर सगळा जाण-पिछाण रा भाई सैणा रो घणो-घणो आभारी हू जिणा रो समै समै पर हर सभव सैयोग मिळियो।

सुरसत माता रै मन्दिर में, इक फूल म्हारो भी अरपण है।
'मुरधर म्हारो देस साप्रत मायड भाषा रो दरपण है।।

कानदान कल्पित
झोरडा

5 अगस्त 2004

विगत

•

मुरधर म्हारो देस

मखमल बेळू रेत
रमै नित राम जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाँव जठै
सोने जैड़ी रेत मसळता हाथा में
राजी हूता नाख दो मुट्ठी माथा में
रमता कान्ह गुवाळ धण्योड़ा खेता में
जीवण रा चित्राम मड्योड़ा रेता में
मुळकै मूक सजीव
पड़्या सैनाण जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
नामी नगर नागौर नगीणा न्यारा है
भारत-भर में एक चमकता तारा है
जोधाणै नर तेज जिया तलवारा है
बीकाणा सिर मौड़ फणी फुफकारा है
जौहर जैसलमेर
जबर जुझार जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
जगी गढ चित्तौड़ धाक रणधीरा री
जगत सिरोमणी धाम पदमणी मीरा री
अमर अजर अजमेर हाकमी पीरा री
जैपर गुलाबी सैर हार लड़ हीरा री
जतर-मतर म्हैल
माळिया और कठै?
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै

ऊचो गढ़ गिरनार आबू हजारा में
लागै भीड़ अपार पग बजारा में
कोटा बूंदी चमक, चादणी तारा में
मस्त नजारा देख धवल री धारा में
पग-पग पर घनघोर
पुरवा घमसाण जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
खेत करम नितनेम, धरम री पोथी है
साथी है हळ बैल पसुधन मोती है
फटी-पुराणी पाग ऊधी-सी धोती है
कामगरा किरसाण जागती जोती है
जीवै मैणत पाण
मानवी देख जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
जीवण रो आधार एक ही खेती है
बिरखा म्हारै देस सदा कम होती है
बरसै सावण मास आणद कर देती है
बाजर मोठ गुवार मूग-कण मोती है
काचर, बोर मतीर
मेवा मिस्टाण जठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
करै कोयला डील तपै ज्यू धाणी है
पच-पच करदै रगत पसीनो पाणी है
जीवत बाळै खाल मूंढै मुळकाणी है
तूफाणा री ओट पळै जिन्दगाणी है
खड्यो तावड़ै लाय
धुवा धकरोळ उठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
लबा काळा केस लूब लट्ट नागणिया
धीमी चाल मराळ जिया गजगामणिया
पतळी कमरा होठ गुलाबी-सी कळिया

मीठा मिसरी बोल कवळ-तन कामणिया
पणघट पग पणिहार
पायल झणकार उठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
काम पड़्या हर नार झासी राणी है
मरजादा कुळ लाज अमर निसाणी है
घुरता घोर निसाण हुया अगवाणी है
नर सिमरथ मजबूत पगा में पाणी है
हसता-हसता सीस
सौंप दै बात सटै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
माणस मूघा जाण जिता जळ ऊडा है
भिड़िया दै नीं पूठ पैंड पाऊडा है
जीव थका लै खोस कुणा रा मूढा है ?
छेड़्या काळै नाग सरीखा भूड़ा है
रण में बबरी सेर
सरीसा भभक उठै
मुरधर म्हारो देस
झोरड़ो गाव जठै
मखमल बेळू रेत रमै नित राम जठै
मुरधर म्हारो देस झोरड़ो गाव जठै

❖

मुरधर रा मोती
(मेजर शैतानसिंगजी)

फरज चुकायो था समाज रो
मुरधर रा मोती
मारग लियो था रीत-रिवाज रो।।

बोली माता हरसाती बेटो म्हारो जद जाणी।।
लाखू ल्हासा माथै सुवैला जद हिन्दवाणी।।
बोटी-बोटी कट जावै उतरै ना कुळ रो पाणी।।
अमर पीढ्या सू ढाणी पिता री अमिट कहाणी।।
ध्यान कर लीजै इण बात रो
मुरधर रा मोती
दूध लाजै ना पियो मात रो।।

सूतै पर वार न कीज्यो धोखै सू मार न लीज्यो।।
पीठ पर घाव न कीज्यो साम्ही छाती भिड़ लीज्यो।।
गोळा री परवा नाहीं पत्थर छाती कर लीज्यो।।
बोली चापावत राणी पीढ्या अमर घर कीज्यो।।
करज उतारो भारत मात रो,
मुरधर रा मोती
सूरज सोनै रो उग्यो सातरो।।

राणी री बात सुणी जद रगत ऊतर्‌यो नैणा में।।
लोटी री नई तरगा लाली लाई नस-नस में।।
माता नै याद करी जद नाम अमर मरणा में।।
आसीसा देवै जरणी सीस धर्‌यो चरणा में।।
हुग्यो अगवाणी जुद्ध बरात रो
मुरधर रा मोती
माण बढाज्यो मिनखजात रो।।

धम-धम उतरी महला सू, राणी निछरावळ करती।।
उजळी धोरा री धरती मुळकी उमगा भरती।।
आभो झुकियो गढ कगूरा धैना ढींकी थण झरती।।
पोळ्या पग धरता बारै पगल्या बिलूबी धरती।।
जस बढाज्यो जलम रात रो
मुरधर रा मोती
सूरज बण चमकी परभात रो।।

चुसूळ पर चाय करण री चीणी जद बात करैला।।
मरदा नै मरणो अेकर झूठो इतिहास पड़ैला।।
मिनखा रो मोल घटै जद भारत रो सीस झुकैला।।
हुवैला बात मरण री वस रो अश मरैला।।
हेला दै सुणजे गिरिराज रो
मुरधर रा मोती
माण घटै ना रण-बाज रो।।

तोपा टैंक जुद्धवाळी धधक उठी धुवाळी।।
गोळी पर बरसै गोळी लोही सू खेलै होळी।।
काळ्ळ आया ज्यू काळी आभै छाई अधियाळी।।
फीको पड़ियो रे रग परभात रो
मुरधर रा मोती
आछो लायो रे रग जात रो।।

जमियो रियो सीमा पर छाती पर गोळ्या सहकर।।
दुस्मीड़ा कांपै थर-थर मरग्या चींचाड़ा कर-कर।।
सूतो हिन्दवाणी सूरज लाखा ल्हासा रै ऊपर।।
माता री लाज बचाकर सीमा पर सीस चढाकर।।
मुगट राख्यो था भारत मात रो
मुरधर रा मोती
सूरज बणग्यो थू परभात रो।।
फरज चुकायो था समाज रो
मुरधर रा मोती
मारग लियो था रीत-रिवाज रो।।

आजादी रा रुखवाळा

आजादी रा रुखवाळा
सूता मत रीज्यो रे
आवैला केई मोड़ मारग
पर चलता ई रीज्यो रे

आजादी रखणी काई है? भाला री इणिया सोणो
सस्ती-सी मत जाण मौत री गोदी में सेजा सोणो
आजादी राखणिया जाणे पग-पग पर तिल-तिल कटणो
आजादी नै राखै वै ही, मौत बिना मांडै मरणो
दोरी घणी आजादी आई
सुजग रीइयो रे
आजादी रा रुखाळा
सूता मत रीज्यो रे

आजादी खातर मा बैना, काकड़ में बाटा रुळगी
हथळेवै मैंदी लाग्योड़ी औरा रै हाथा चढ्गी
नुवैं दिन कामण घर काग उडाती ही रैगी
मावा री बेटा रै खातर पुरस्योड़ी थाळ्या रैगी
बलिदाना री मूघी घड़िया
याद करीज्यो रे
आजादी रा रुखाळा
सूता मत रीज्यो रे

मातभोम पर सीस चढा कर मरणो ही मगल जाणै
रमण्या री गोदी में नाहीं रणखेता रमणो जाणै
चवरया पर चढणै री बेळ्या बलिदाना चढणो जाणै
गळिया में रमणै री बेळ्या भींता में गडणो जाणै

बा राखी आजादी बारो
मारग लीज्यो रे
आजादी रा रूखाळा
सूता मत रीज्यो रे

आजादी नै बै राखै जका मरणै री मन में राखै
आजादी नै बै राखै जका छाती पर गोळी राखै
आजादी नै बै राखै जका, सीस हथेळी पर राखै
आजादी नै बै राखै जका खाधै पर खापण राखै
ओळा ज्यू गोळा बरसता
नेड़ा रीज्यो रे
आजादी रा रूखाळा
सूता मत रीज्यो रे

आवैला कई मोड़ मारग पर चलता रीज्यो रे
आजादी रा रूखाळा सूता मत रीज्यो रे
❖

चेत मानखा

चेत मानखा दिन आया,
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो,
सूता सिंघ जगावाला।।
सभळ-सभळ भारत भावी जलमभोम जस गावै है।।
आज देस री सींवा माथै दुसमी रोळ मचावै है।।
कूद पड़ो रणधीरा रण में गीत जीत रा गावाला।।
जिण धरती रो अन खायो धरती रो करज चुकावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिंघ जगावाला।।
जाग देस पर आज बिखै रा बादळ किण विध छावै है।।
सिंघा री थैवा में कींकर स्याळ्या अलख जगावै है।।
मरणो माड मरण बैळ्या परलै रो सख बजावाला।।
मरण त्यूहार मनावण खातर काकड़ पर गड जावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिंघ जगावाला।।
पेच पाग रा कर केसरिया खाधै खापण धर लीज्यो।।
बम्ब-गोळा बरसात-झड़ी में हसता-हसता रम लीज्यो।।
सामीं छाती मौत भिड़ै रण आख मींच भिड़ जावाला।।
माता रै हेलै रै समचै बिजळी बण पड़ जावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिंघ जगावाला।।

आज मुलक रै माण सटै घर-बार छुटै तो छुटबा दै।।
जलमभोम री जमीं सटै जै सीस कटै तो कटबा दै।।
पीठ दिया रण आज बिखै में, मूढो कठै लुकावाला।।
सीस सदा ऊचो भारत रो नीचो किया झुकावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिघ जगावाला।।
जाग उठे सावत सूरा अब, लाज बचावण माता री।।
मार झपट्टो दुसमण रै रण कूद पड़ो कर किलकारी।।
भाग्या भोम जलम री लाजै रण भिड़िया जस पावाला।।
जीव थका कुण आज खोसलै मारा अर मर जावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिघ जगावाला।।
धमक उठै तोपा घमसाणा एक बार फिर सू रण में।।
घणा दिना सू प्यासी धरती रगत सींच दो कण-कण में।।
हाथ पसार्‌या आज बिखै में मौत बिना मर जावाला।।
मोल करैला मिनखा रा काया रै कलक लगावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिघ जगावाला।।
मत ताको पाछी भारत रा रण में रड़क बजावाला।।
दुसम्या री छाती रै माथै बम-गोळा बरसावाला।।
आज देस री सीवा माथै हस-हस सीस चढावाला।।
मरग्या तो मा री गोदी में रहग्या तो गुण गावाला।।
चेत मानखा दिन आया
झगड़ै रा ढोल घुरावाला।।
उठो आज पसवाड़ो फोरो
सूता सिघ जगावाला।।

❖

आ धरती

आ धरती रामा लिछमण री माथा देवै बात सटै
इण री कूख तपस्वी जलम्या भरत सरीसा बीर अठै
और कठै रे भाई और कठै ?

दुर्गादास सिवा बेजोड़ी, मिलै जगत में थोड़ी-थोड़ी
मरजादा किल्लै री तोडी घोड़ो कूद गयो राठौड़ी
सिघा नै दाकल ललकारै चोटी माहीं झाळ उठै
काळै री पूछा पग दीनो भिड़िया रण भूचाल उठै
और कठै रे भाई और कठै ?

चूडावत रूखो मन कीनो, सीस काट राणी धर दीनो
जद-जद रग केसरिया कीनो सतिया पग अगनी में दीनो
जौहर री ज्वाला कण-कण में देख धधकती आज अठै
दे माटी उकराळो भभकै पदमणिया री राख जठै
और कठै रे भाई और कठै ?

अमर नाम करणी इतिहासा पन्ना धा सिघणी री जाई
हसती-हसती वार झेलगी बेटै री ममता नीं लाई
खड़ी निजारा रही देखती उलट-पुलट असमाण फटै
धिन छाती बज्जर सू काठी आख्या साम्हीं पूत कटै
और कठै रे भाई और कठै ?

लाल आज है जिण माटी हेला दै हलदी री घाटी
घास-फूस री खाई बाटी सिघ अेकला फौजा डाटी
रण मतवाळी झासीवाळी मरदानी तलवार जठै
बिजळी-सी पळकी रणखेता बळ खाती सौ बार अठै
और कठै रे भाई और कठै ?

हटै नहीं रण डटै सूरमा, धार धकै तलवारा री
रेसम री डोरी ज्यू उळझै आतड़िया गळहारा री
रण-थभा अगद पग रोपै धमक धुरै घमसाण जठै
सीस पड़े धड़ लड़े सूरमा लाखू है परमाण अठै
और कठै रे भाई और कठै?

कलजुग रा अवतारी बणग्या परभात गाइजै गीता में
इण धरती रा पूत लाडला, जिदा गडग्या भींता में
मौड़ बाध सिर मौत परणलै पण पालण री रीत अठै
भिड़ पगल्या पाछा नीं मेलै जगबाज रणजीत अठै
और कठै रे भाई और कठै?

गाथा अमर देसभगता री जलम्या जबर जोध तपधारी
गाधी बुद्ध अहिंसाधारी नेहरू पचशील अवतारी
भगतसिह आजाद सरीखा मिलसी भळ इसान कठै?
हेला दै चूसल री घाटी गडग्या रण सैताण जठै
और कठै रे भाई और कठै?
आ धरती रामा लिछमण री माथा देवै बात सटै
इण री कूख तपस्वी जलम्या भरत सरीखा बीर अठै
और कठै रे भाई और कठै?

हालो हेमाळै

देस री आजादी माथै भार पड़ियो रे।
हालो हिमाळै।।

हिमाळै री बुरजा माथै जगी तोपा गरजै रे।।
भाया री छाती रै माथे गोळा बरसै रे।।
हालो हिमाळै।।

सूता कींकर साथीड़ा अबकाळै काम पड़ियो रे।।
छाती माथै दुसमीं वाळो हाथ पड़ियो रे।।
हालो हिमाळै।।

काकड़ माथै झगड़ो मंडियो चीला दीनो गरणाटो।।
तोपा रा घमीड़ उठै गोळ्या रो बरणाटो।।
हालो हिमाळै।।

पाबूजी हरबूजी जागो दुसमीं काकड़ ऊतरियो।।
सूता कींकर अमलीजी काई अमल ऊतरियो।।
हालो हिमाळै।।
बळबळती भोभर में भूल'र पग मत दीजै आच में।।
कासमीर सुपणै में देखी पळको काच में।।
हालो हिमाळै।।

बैतोड़ी रण-गगा में साथीड़ा हाथ धोलो रे।।
झगड़ै हाला खाधै पर बन्दूक धरलो रे।।
हालो हिमाळै।।

हिमाळै री धोळी भींता गुदळै लोही रगदी रे।।
घाटी-घाटी मिनखा-लोही लाल करदी रे।।
हालो हिमाळै।।

मरणो तेवड़ साथीड़ा घर-घर सू आज निकळज्यो रे।।
खाधे खापण लेयनै हिमाळै ढळज्यो रे।।
हालो हिमाळै।।

जीता रिया पाछा आता जगी ढोल घुरावा रे।।
मरिया इण झगड़ै में, सैंदै सुरगा जावा रे।।
हालो हिमाळै।।

भीड़ पड़ै जद भाया में, भाईड़ा नैड़ा रीज्यो रे।।
कानदान गावै फागणियो ध्यान धरीज्यो रे।।
हालो हिमाळै।।

देस री आजादी माथै भार पड़ियो रे।
हालो हिमाळै।।

❖

धड़ सीस पड़ै पण झुकै नहीं

मारै मर जावै बात सटै
चल पड़्या पाव फिर रुकै नहीं।
मजबूती राखै रजपूती–
धड़ सीस पड़ै पण झुकै नहीं।।
झणकार जका नै पायल री
मारग सू नाहीं मोड़ सकै।
दौरी बैळ्या में भीम जका
आचळ री नाहीं ओट लुकै।।
इतिहास जका रो साखी है
भिड़ता रण सको नीं लावै।
इसड़ै वीरा रो जस गाता
छाती गज ऊची उठ जावै।।
राठौड़ हठीलो अमरसिघ
रजपूती रगन रगा में हो।
विकराळ भतूळो अपरबळी
करड़ो क्ड़पाण पगा में हो।।
सिलावत बोली रो बैड़ो
बकग्यो कीं अनरथ अकळ-बकळ।
सुणता ही आग लगी रू-रू
जीतो नीं जावै नीच निकळ।।
रणधीरा सूरा वीरा नै
रेकारा गाळ जिया लागै।
काळै री पूछा पग दीनो
सूती-सी हूक हियै जागै।।
भुज फड़क्या आख्या लाल हुई
नैणा में रगत उतर आयो।

क्रोधानल धधक उठी हिवड़े
बाकड़ली मूछा बळ खायो।।
तत्काळ हुयो विक्राळ प्रगट
पल माय फैसलो कर लीनो।
पड़ियो जा हाथ कटारी पर
असवार पागड़ै पग दीनो।।
जहरीली नागण नखराळी
बळ खाती जळ-थळ मछली-री।
परळाटा करती हरळाटा
आभै में चमकी बिजळी-सी।।
आ जिण नै काटै बचै नहीं
मिनखा मुख सुणी कहाणी है।
काम दवा-दारु रो नीं
डसिया नीं मागै पाणी है।।
फुफकार उठी कुण रोक सकै
हुकार भरी दूधारी है।
ओव्योड़ी भोभर भभक उठी,
साप्रत परळै चिणगारी है।।
चमचम करतोड़ो चमचमाट
अम्बर सू तारो टूट्यो है।
चढ्‌ग्यो जो सीधो धार-धकै
बिण रो तो राम हि रुठ्यो है।।
आगै सिलावत भाग रियो
लारै चढ घोड़ै किड़क्यो है।
घोड़े री घसळा हवा वेग
ढग देख दिलीपत भिड़क्यो है।।
दे सरण बादशाह मारै है
बिण पैला बाज झपट धरगी।
आख्या रै सामीं आलम रै
धड़ सीस अलग करती बहगी।।
जा मुण्ड पड़्यो ठोकर आगै
बक-बक लोही री धार चली।
हाको-सो फूट्यो मैला में
कट्टार चली कट्टार चली।।

कर मार-धाड़ कट्टार वार
रणधीर वीर आगै बधग्यो।
खंभ फाड़ कटारी पार चली,
पतशाह दौड़ महला चढ्ग्यो।।
रंगमहला आंचळ री ओटा
दिल्लीपत मार रियो हेला।
दरवाजा जड़ दो किल्लै रा
बच रीज्यो मार रगड़ दैला।।
बुरकै में डुसक्या भरतोड़ी
महला में बीण्या गरळाई।
दिल्लीपत आगै डरतोड़ी,
ऊंची आंगळिया कुरळाई।।
ऊभो पतशाह झरोखै में
यू देख पड्यो खायो टिल्लो।
दी थाप पीठ ललकार चढ्यो
छिन कूद गयो घोड़ो किल्लो।।
पीळो मुख पड़ियो पेंचै-सो
सरमायो पड़ियो लजखाणो।
मरजादा तोड़ी किल्लै री
हाकल कर सूरज हिन्दवाणो।।
झगड़ै रा जंगी ढोल घुरया
दळ-बादळ लारै फौज उठी।
घम-घम करतोडी धुंवाधोर
बुरजा पर तोपा गरज उठी।।
फौजा नीं पूग सकी सूरो
खतरै री लांघ गयो घाटी।
धिन-धिन छतरी री छाती नै
बज्जर सू करड़ी ही काठी।।

सीखड़ली

डब डब भरिया, बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण लाडलड़ी रा नैण
तीतरपखी रा नैण सूवटड़ी रा नैण
दो'रो घणो सासरियो।।
मावड़ जाण कळेजै री कोर, फूल माथै पाख्या धरी।
माथै कर-कर पलका री छाय पाळ-पोस मोटी करी।
राखी नैणा री पुतळी जाण, मोतीड़ा सू महगी करी।
कर-कर आघ लडाई घण लाड
भरीजी मन गाढ
जीवण मीठो जहर पियो
दो'रो घणो सासरियो।।
डूबी सोच समदड़ै रै बीच तरगा में उळझ परी।
जाणै मोत्या बिचली लाल पल्लै बधी खुल परी।
भरियो नैणा ममता-नीर लाडलड़ी नै गोद भरी।
जागी-जागी काळेजै री पीड़
हिय सू लीवी भीड़
गरळ-गळ हिवड़ो भरयो
दो'रो घणो सासरियो।।
भाभीसा काढ काजळियै री रेख सवारी हिंगळू मागड़ली।
बीरोसा लाया सदा सुरगो बेस ओढाई बोरग चूदड़ली।
बाबोसा फेरयो माथै पर हाथ दिराई बाई नै सीखड़ली।
ऊभो-ऊभो साथणिया रो साथ
आसूड़ा भीज्यो है गात
नैणा झड़ ओसरियो
दो'रो घणो सासरियो।।
करती कळझळ हिवड़ै रा टूक कूकू पगल्या आगै धरया।
कायर हिरणी-सी मुड़-मुड़ देखै आख्या माथै हाथ धरया।

गुखड़ो गुरड़्यो बिछड़ता आज रो-रो नैण राता करया
चाद-गुवाड़ै उदारी री रेख,
दुराक्या भरती रेख,
सहेल्या गायो गोरियो,
दो'रो घणो सासरियो।।
रथड़ै चढतोड़ी पाछल फोर सहेल्या नै झालो दियो।
कूकू-छाई बाजर हरियै खेत जाणै जिया झोलो दियो।
छलक्या नैण घूघटियै री ओट काळजो काढ लियो।
काळी-काळी काजळियै री रेख
मगरी पड़गी देख
नैणा सू ढळक्यो काजळियो,
दो'रो घणो सासरियो।।
मनण-रूठण रा आणद उछाव हियै रै परदै मडता गिय
सारा बाळपणै रा चित्राम नैणा आगै ढळता गिया।
बिलखी मावड़ नै मुड़ती देख विकळ नैण झरता गिया
करती निस-दिन हस-किलोळ
बाबोसा-घर री पोळ
ढुल्या रो रमणो छूट गियो
दो'रो घणो सासरियो।।
लागी बाळपणै री प्रीत जातोड़ी जीवड़ो दो'रो कियो।
रेसम रासा नै दी फणकार सागड़ी नै रथड़ो खड़्यो।
धरती अम्बर रेखा रै बीच सोवन सूरज डूब गियो।
दीख्या-दीख्या सासरियै रा रूख
रेतड़ली रा टूक
सौ कोसा रहग्यो पीवरियो
दो'रो घणो सासरियो।।
डब-डब भरिया बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण लाडलड़ी रा नैण
तीतरपखी रा नैण, कोयलड़ी रा नैण
सूवटड़ी रा नैण दोरो घणो सासरियो।।

चन्दर चकोरी

हिंगळू-सा होठ
अलका चख उळझ्यो री
चन्दर चकोरी
रेसम री डोरी

भार तोल-जोख नापू रग-रूप तोल कोनी
काई बताऊ कोई मुखड़ै में बोल कोनी
सबदा रा जाळा गूथू, चालै तिल पोल कोनी
उपमा री फाल सादू, सबद सतोल कोनी
विधाता सवारी रूप रास निचोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

कलपणा अडाण बाधू, भावा रा मडाण कोनी
गीत भी गाऊ-कीकर? राग में रसाण कोनी
हिवड़ै री कोठड़ी में आवै उफाण कोनी
होड री बराबरी में रूप रा बखाण कोनी
मँडै चित्राम कीकर? सुपणै निहोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

मागइली खितिज रेख पीळै परभात री-सी
प्यारी मन हथळेवै रग मैंदी हाथ री-सी
सरद पुन्यू री सोभा कळी है गुलाब री-सी
सावण री झड़िया माहीं घटा बरसात री-सी
गोरी गजगामण मदमस्त पियोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

मरतो निहारै नैणा सासड़ी अटक जावै

हिवड़ै री कळिया माहीं सूळ-सी खटक जावै
भरम रै भरोसै कोई भवरो भटक जावै
नैणा रै तीरा माहीं काळजो अटक जावै
नींबू री फाड़ पलका कचण कटोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

हसिया बसती कळिया, कवळी बिखर जावै
बागा रै भुवरिया रो काळजो डबक जावै
रस्तै झरोखा बैठी, निजरा जे पड़ जावै
नैणा री डोरी-डोरी हिये में उतर जावै
हिवड़ै री रग-रग, मचै किलकोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

आखड़्या री पाखड़्या में काजळियो घुळ जावै
खितिज रेखा में काळो बादळियो बिखर जावै
हिंगळू घुळाती अधरा, मन-मेलू बतळावै
आसड़ी री सासड़ी रो, सरगम सुधर जावै
मनड़ै रो मोर नाचै निजरा निहोरी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

ऊजळी बतीसी रेखा होठा में मुळक जावै
चूदड़ी रै तारा माहीं चादणी रळक जावै
पवन रै झपटै दामण नैण जे उघड़ जावै
अलका री ओटा माहीं बीजळी पळक जावै
हिवड़ै में जावै लैरा रग-रग दो री
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

हिंगळू-सा होठ अलका चख उळझ्योड़ी
चन्दर चकोरी रेसम री डोरी

❖

उडीकू

उडीकू ऊभो पलक पसार
थारै बिन सूनो है ससार
जीवण रै तारा में घुळगाठ
उळझगी मिल सुळझाणी है
जुगा सू जलम–जलम रो साथ
तोड़ मत प्रीत पुराणी है
हेत रा आसू रळसी रेत
जीवणो मुसकिल पलक बिसार

पुराणा पाना मती उथैळ
जीवण री मैली पोथी है
परख मत खोटा–खरा अणमोल
बिधग्या सो ही मोती है
प्रीत री रीत तणी पिछाण
बणै तो बण जीवण–आधार
उडीकू ऊभो पलक पसार
थारै बिन सूनो है ससार

नखचख सोळै बिन सिणगार
काजळी आख्या फीकी है
चादमुख चूदड़ मगसी कोर
माग बिन हिंगळू टीकी है
सैणा बिन बिलखा राता नैण
उमग बिन हिवड़ै सूळ त्यूहार
उडीकू ऊभो पलक पसार
थारै बिन सूनो है ससार

गुलाबी होठां री मुरळकाण
निरख दुख सारा बिसराऊं
जीवण संग तूफाणां घमसाण
ओकलो पार नहीं पाऊं
किनारो अळगो ऊंडी धार
कठिन है तिरणो समन्द अजार
उडीकूं ऊभो पलक पसार
थांरै बिन सूनो है संसार

हेताळू बिना लाम्बी रात
चांदणी बरसै आग अंगार
उडीकूं ऊभो पलक पसार
थांरै बिन सूनो है संसार
जीवण री जगती जगमग जोत
राधा बिन रास अलूणी है
बिरछ रा पात झड़या बेडोळ
अपणी मिनखा जूणी है

•

म्हूं भूल्या नहीं भुलाऊला

थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला
थू भूल सकै तो भूल भला म्हू भूल्या नहीं भुलाऊला

नैणा रै राता डोरा में
उळझी ओळू री घड़िया में
आसा री सासा में अटकी
गीता री मीठी कड़िया में
हिवड़ै में राखू जड़ आगळ उजड़्यो ससार बसाऊला
थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला

जिण सू मिलणै री आसा में
जीवण री रग-राता ढळगी
जिण खातर रो-रो आख्या पर
धूधळ छाई पलका गळगी
इण भौ में पल्लो छूट गियो अगलै भौ में मिल जाऊला
थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला

चंदै में चमक-चादणी ज्यू
हिवड़ै री रमगी रग-रग में
हर सूरत में थारी मूरत
दीखै पग रुकज्या मारग में
अतस री आतस आसू पी तन-मन री तपत बुझाऊला
थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला

भूलण रा जितरा जतन किया
जागी मन हूक-सी मिलणै री
सुळझाई ज्यू-ज्यू उळझ-उळझ
गाठा घुळगी नीं खुलणै री

भीतर ही भीतर घुळ-घुळ कर जीवण जजाळ बणाऊला
थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला

मर जाऊ तो इतरी मैर करी
सग हाल मुसाण पुगा दीजे
कोमल रेसमिया हाथा सू
अरथी में आग लगा दीजे
थारी छाया तक पड़णै सू, मरिया मोखातर पाऊला
थू मनै मिलै या नहीं मिलै म्हू गीत मिलण रा गाऊला
थू भूल सकै तो भूल भला म्हू गीत मिलण रा गाऊला

•

ढळगी गढ रै झरोखां

ढळगी गढ रै झरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै बाटड़ली।

ढळगी रात बटाऊ पछिम चालियो
रैंस किरण्या सोनै रो सूरज ऊगियो
फीकी पड़गी दिवलै री लजी लोय
कींकर लागी आखड़ली।
ढळगी गढ रै झेरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै बाटड़ली।

घुळती नींद नैणा रै राता डोरा में
बिजळी पळकी भुरजा री काळी कोरा में
ढळक्यो व्हैला पलका सू निरमळ नीर
फरूकी व्हैला आखड़ली।
ढळगी गढ रै झेरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै बाटड़ली।

कींकर पलका में सहजै रो नीर रुक्यो
कींकर मनड़ै नै मार किवाड़ ढक्यो
कींकर उळझ्या सुळझाया लम्बा केस
सवारी किण विध मागड़ली।
ढळगी गढ रै झेरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै बाटड़ली।

मन में जूनी घड़िया री बाता आई वैला
काई-काई-सी रचना रचाई वैला
जीवण बीणा रा टूट्या वैला तार
लगाई किण विध गाठड़ली।
ढळगी गढ़ रै झरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै वाटड़ली।

मन नै मन सू समझा मन में रैय गई
सारी बाता पवन साथै वैय गई
काई किण नै बतावै बैठी
खोल जुगा री बाधी गाठड़ली।
ढळगी गढ रै झरोखा बैठा रातड़ली
बैठी दिवलै री बाट सजोय
किणा री जोवै वाटड़ली।।

कोयलड़ी क्यूं बोली

ढळतोड़ी माझळ रात कोयलड़ी क्यू बोली।
म्हारो साइनो बसै परदेस कोयलड़ी क्यू बोली।
भर नींद में ओझकी नैणा री उडगी नींद।
कोयलड़ी क्यू बोली।।

मत घोळे जीवण जहर में पवन री ठण्डी लहर में।
बा पवन हबोळो दे गई ढळतोड़ी पाछ्ल पहर में।
जद बेळा-कुबेळा बावळी जाणै नीं जोग-विजोग।
कोयलड़ी क्यू बोली।।

थू बोली थारै भाव में काटो चुभियो म्हारै घाव में।
कारया लाग्योड़ै काळजै मत तीर चला यू ताव में।
जीवत बळगी चामड़ी रू-रू में लागी लाय।
कोयलड़ी क्यू बोली।।

मीठी धुळती नींद में थू मस्त टऊको दे गई।
थू आज राग री रीझ म्हारो काढ काळजो ले गई।
कोई भभक उठैली खख सू, विरागळ अळस मरोड़।
कोयलड़ी क्यू बोली।।

मीठी वाणी रस घोळती थू बोली ढळती रैण में।
नैणा री पलका भीजगी म्हारो जीव अटकियो सैण में।
कोई कळझळ करती कामणी थारी नसड़ी दैला मरोड़।
कोयलड़ी क्यू बोली।।

जितरी पास नजर सू निरख्या

जितरी पास नजर सू निरख्या उतरा ही दूर गिया।
जितरा हरख हियै में राख्या भीतर घाव किया।।
अन्तस री आतस उर जागी
धपळक आग हियै में लागी।
प्रीत तणी अमूझ अभागी
पिघळ रळक नैणा में छागी।।
ज्यू-ज्यू जतन किया रोकण रा प्याला छलक गिया।
जितरा हरख हियै में राख्या भीतर घाव किया।।
अन्तस मन कुरळावै गावै
गूगो-गैलो जगत बतावै।
सुण-सुण मन काया कळपावै
ई जग नै अब कुण समझावै।।
खा-खा जगत थपेडा काठा हिम्मत हार गिया।
जितरा हरख हियै में राख्या भीतर घाव किया।।
मत कर मान सोच मन मैला
सभळ पाव धर जगत झमेला।
प्रीत रीत जवानी खेला
ऊमर ढळता जीव अकेला।।
हृय सकै अळगो ही रहणो मत-ना भूल किया।
जितरा हरख हियै में राख्या भीतर घाव किया।।
जितरी पास नजर सू निरख्या
उतरा ही दूर गिया।
जितरा हरख हियै में राख्या
भीतर घाव किया।।

मन मिळियां रा मेळा है

मिळिया पण अन्तस नीं रळिया जीवण जगत झमेला है।
तन मिळिया पण मन नीं मिळिया, मन मिळिया रा मेळा है।।

वसन्त रितु बागा में सूतो
मचै भीतर घमसाण नहीं।
सावण री रिमझिम घड़िया में
आवै उर ऊफाण नहीं।।
तो समझो रे रात बसेरा लोग दिखाऊ भेळा है।
तन मिळिया पण मन नीं मिळिया, मन मिळिया रा मेळा है।।

सारी रात अलूणी रहगी
बाता सू होयो काई।
हिवड़े री धड़कण पर जीवण
मुळकण री झाई नाहीं।।
सासा री सरगम पर कोई लोटै साप विसैला है।
तन मिळिया पण मन नीं मिळिया मन मिळिया रा मेळा है।।

रास नहीं आवै जिंदगाणी
जीवण रा रस फीका है।
पूरब-पच्छिम दौड़ लगावै
सूरज तणा सलीका है।।
नित ऊगै नित डूबै ऊगै सिज्या पलक समैळा है।
तन मिळिया पण मन नीं मिळिया मन मिळिया रा मेळा है।।

प्रीत री रीत समझ अणोखी
प्रीत कोई बैपार नहीं।
मन रा मन सू सौदा है

मागी मिलै उधार नहीं।।
प्रीत का रिस्ता समझ न सस्ता, नहीं बजारू ठेला है।
तन मिळिया पण मन नी मिळिया मन मिळिया रा मेळा है।।

जीवण-रास अधूरी रहज्या
मनमेळू रै बिन मिळिया।
मगसी मन-चादणी लागै
सूनी हिरदै री गळिया।।
भरै बजारां भीड़-भड़ाकै पछी साव अकेला है।
तन मिळिया पण मन नी मिळिया मन मिळिया रा मेळा है।।

मिळिया पण अतस नहीं रळिया
जीवण जगत झमेला है।
तन मिळिया पण मन नीं मिळिया
मन मिळिया रा मेळा है।।

❖

ओळू री घड़िया में

हिवड़ो अमूझै बरसै नैण
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली
नैणा री झडिया में
गळगी आसड़ली।

रितुवा नै गीत पुराणी
जूनी घड़िया रा गाया।
हिरदै रै परदै माथै
धुधळा चित्राम छाया घायल कळेजै काचै घाव।
छुरया रा छबरक्या
देयगी रातड़ली।
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली।
नैणा री झडिया में गळगी आसड़ली।।

रिमझिम बिरखा आई
झीणी पायल झणकाती।
पैड़ी-पैड़ी पग धरती
मैड़ी-मैड़ी मुळकाती बेला बिलूबी उळझ्या नाळ
मुळकी सिणगारी
आभै साझड़ली।
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली।
नैणा री झड़िया में गळगी आसड़ली।।

रीता रै गीता माहीं

माग सवारी रहगी।
तोरण आयोड़ी बाकै
प्रीत कवारी रहगी सास-उसासा लागी लाय।
जीवण में अधूरी
रहगी बातड़ली।
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली।
नैणा री झड़िया में गळगी आसड़ली।।

डग-दो डग साथै चाल्या
आगै कर लारै रहग्या।
मतलब नीं समझ्या कल्पित
भोळी बाता में बहग्या जगत हसाया सब लोग।
आछी निभाई रे
साथी प्रीतड़ली।
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली।
नैणा री झड़िया में गळगी आसड़ली।।

हिवड़ो अमूझै बरसै नैण
ओळू री घड़िया में
उळझी सासड़ली
नैणा री झड़िया में
गळगी आसड़ली।।
❖

महिनो फागण रो

लूवा-झूबा ढोला रै ढमकै आयो रे
महिनो फागण रो।

फागण री मस्ती लेता नै कोई की मत कीज्यो रे।
थोड़ो जग में जीवणो कुजस मत लीज्यो रे।
महिनो फागण रो।।1।।

कुण जाणै कालै इण वेळ्या सगळी सागै रहसी रे।
कानी-कानी पछीड़ा तड़कै ढळ जासी रे।
महिनो फागण रो।।2।।

गोरै हाथा गजबण रै सुरगी मैं'दी मुळकै रे।
मस्ती में हसता होठा सू, हिंगळू ढळकै रे।
महिनो फागण रो।।3।।

कहती लाज मरै मनड़ै में गीता में समझावै रे।
मदछकियो परदेसा माळै ओळू आवै रे।
महिनो फागण रो।।4।।

झीणो-झीणो फागण गावै गळिया ऊभ बिचाळै रे।
रस्तै बहता भिजखा पर गुलाल राळै रे।
महिनो फागण रो।।5।।

गीतेरण गीता री कड़िया इमरत रस बरसावै रे।
झीणै-झीणै घूघट में बिजळ्या पळकावै रे।
महिनो फागण रो।।6।।

कामणिया गजगामणिया मदमाती मन में मुळकै रे।
गुलाबी होटा सू हसता दात पळकै रे।
महिनो फागण रो।।7।।

लूर में रीझ्योड़ी गोरी हाली ऐडी लरकै रे।
चूदड़ी रै चारु पल्ला गोटो पळकै रे।
महिनो फागण रो।।8।।

धीमो बाजै बायरियो बसत फूला छायो रे।
चग बाजै चौवटै गिगन गिरणायो रे।
महिनो फागण रो।।9।।

औडी रै ठमरकै रिमझिम पगल्या पायल बाजै रे।
ढोला रै ढमकै सागै अम्बर गाजै रे।
महिनो फागण रो।।10।।

धमचक धूम मची गळिया में गहरा धूसा बाजै रे।
गोरी-गोरी गोरड्या मस्ती में नाचै रे।
महिनो फागण रो।।11।।

जोबनियो ढळ जासी कालै पाछो कोनी आवै रे।
कानदान रगभीनो फागण गाय सुणावै रे।
महिनो फागण रो।।12।।

लूबा-झूबा ढोला रै ढमकै आयो रे।
महिनो फागण रो।।

उठ हाल पटेलण हाला

उठ हाल पटेलण हाला नागौरी मेळै चाला।
बळ्धा ला जोता बैली, मेळा री मौज कराला।।
उठ हाल पटेलण हाला,
नागौरी मेळै चाला।।
थे हूग्या काईं गैला, छोरा कइ लारै रैला।
म्हू तो नीं चालू रोवता, टाबरिया छोड अकेला।।
उठ हाल पटेलण हाला
नागौरी मेळै चाला।।

थारै झुटणिया घड़वादू, थारे लड़-लुम्बा लटकायदू।
पगल्या में रिमझिम पायल हाथा हथफूल घड़ायदू।।
बगड़ी बाजूबन्द रखड़ी नथड़ी में रतन जड़ायदू।
सोनै री लड़ तेवटियो कण्ठी में चाद जड़ायदू।।
ओडी रै ठुमकै ठमकै बाजै रमझोळ घड़ायदू।
गळहार सजा मोत्या सू, दाता में चूप जड़ायदू।।
थारो रूप निरख गजगामणी।
फीको मन चाद पड़ैला।।

थारै सागानेरी लहरो जोधाणै री चूदड़ लायदू।
चूदड़ रै च्यारू पल्ला गोटो किनार जड़ायदू।।
रेसमिया आटी-डोरा काजळ टीकी मगायदू।
हिंगळू रग मिणिया मोती कुड़ती में काच जड़ायदू।।
गोरै हाथा पर गजबण आबू रा मोर मडायदू।
सुणलै पनकी री काकी थारै बुर्वो धाबळो लायदू।।
थारे नटिया सू बावळी।
नीचो असमान पड़ैला।।
है पड़ियो काईं मेळा में दै लोग बंठै धक्का री।
जद बात चलै ट्वका री कद बात बणै भूखा री।।

था बात करो मेळा री म्हे लाज मरू मिनखा री।
ओढणियो प्यारू पल्ला लूम्या लटकै लीरा री।।
मत लाड़ खावो मन रा देखो हालात आपा री।
मेले कपड़ा सिणगारी मुळकी मन मार बिचारी।।
थे होळै बोलो बलमा।
सुण बाता लोग हसैला।।

पटेल पड़्यो मन मोळो सुण बात काळजो हिलग्यो।
हिरदै में उठ्यो धपळको अरमाण रेत में रळग्यो।।
बाळू रो म्हैल बिखरग्यो बिन आग जीवतो जळग्यो।
नैणा सूं नैण मिळ्या तो सरणाटै सास निकळग्यो।।
ललचाई आख्या नीची बो होठ चिगळतो रहग्यो।
कर हिमत काळजो काठो, मन री मन में की कहग्यो।।
मुळकै होठ रळकातो।
बोल्यो सब थोक कराला।।

पलटैला किसमत रेखा आवैली घड़ी सुखा री।
निपजै अबकै सावणियो काई बात करी भूखा री।।
दै धान-धान आ धरती आ आज जमीं आपा री।
लै-टूक कस्सी धोरा में बा-खाण गुडी हीरा री।।
कर मैणत इण हाथा सू, बा लड़ निपजै मोत्या री।
उठ रात पौर रै तड़कै रुखाळ करा खेला री।।
जद काम कराला गैली।
भूखा तद किया मराला।।

सिणगारी बात समझगी डबडब आख्या भर आई।
दपीड़ा रा आसू राख्या पलका री ओट लुकाई।।
मुख-चाद गुलाबी होठा फीकी मुधरी मुसकाई।
बोली हिवड़ो हरखाती जोतो गाडी म्हू आई।।
बो सारा दुखड़ा भूल्यो, मुरझी कळिया खिल आई।
बा जद घर सू निकळी बादळ-बिजळी बळ खाई।।
कोई नैण झरोखा झाखता।
मुरछा खा मिनख मरैला।।

बै धणी-लुगाई दोनू, सग हसता मेळै जावै।
अलका री ओटा उळझ्या रसभरिया नैण रिझावै।।

पटेल राग रो रसियो तेजै री कड़िया गावै।
दे रासा नै फणकारा बळधा री चाल दिखावै।।
हरखै निरखै गजगामण मुख मोड़ मुळकतो जावै।
गोरी नै साची-झूठी कर बाता में बिलमावै।।
जरा धीमा हाको सायबा।
धड़कै सू धरण ढळैला।।

उठ हाल पटेलण हाला नागौरी मेळै चाला।
बळधा ला जोता बैलड़ी मेळा री मौज कराला।।
उठ हाल पटेलण हाला।
नागौरी मेळै चाला।।
थे हूग्या काईं गैला छोरा कइ लारै रैला।
म्हू तो नीं चालू रोवता, टाबरिया छोड अकेला।।
उठ हाल पटेलण हाला।
नागौरी मेळै चाला।।

❖

कोई गीता गाई व्हैला

जूनी घड़िया री ओळू रै समचै हिचकी आई व्हैला।
भावा रै समद हबोळा में कोई गीता गाई व्हैला।।

पुरवाई शीतळ झोंका में
मेवासी मोर-टऊका में।
खळ-खळ नद-नीर खळका में
पळ-पळ कर बीज पळका में।।
धर-धर-धर अम्बर धरूका में कोई रै चित छाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै समचै हिचकी आई व्हैला।।

कविता लिखता री घड़िया में
आखर-आखर री कड़िया में।
गीता री लूबक लड़िया में
सावण री रिमझिम झड़िया में।।
सास उसासा में कोई री अटकी-भटकी धाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै समचै हिचकी आई व्हैला।।

बागा री खिलती कळिया में
टोळी मडराती अळिया में।
वसन्त रितु रगरळिया में
चगा पर गाता गळिया में।।
फागण री झीणी राता में कोई रै मन भाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै समचै हिचकी आई व्हैला।।

आसा री ऊची मैड़ी पर
चढ़ता पावड़िया पग धरता।
लम्बी-सी ढळती राता में
मनड़ै नै बाता बिलमाता।।

हिवड़ै री फाटक री आगळ जड़ता ठोकर खाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै समचै हिचकी आई व्हैला।।

सावण सू करता बाता में
मैं'दी रचवाता हाथा में।
तीजा पर गीत गवाता में
नैणा री नाजुक घाता में।।
सूरत वण मूरत नैणा में कोई रै चित छाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै, समचै हिचकी आई व्हैला।।

भावा रै समद हबोळा में
कोई गीता गाई व्हैला।
जूनी घड़िया री ओळू रै,
समचै हिचकी आई व्हैला।।

डुसक्या भरती

खळक-खळक नैणा रा मोती,
ढळक-ढळक गोरी ढळकाती।
छानै-ओलै काढ घूघटो
डुसक-डूसक डुसक्या भरती।।
उडतोड़ा बदाऊ बीरा सुणजे थोड़ी बातड़ली।
सैणा बिन नैणा री पलका, गीली राखै आखड़ली।।
मींत बिना अकल पखेरू अधियाळी राता डरती।
किज्यै काग उडावै कामण, झररर झररर अखिया झरती।।
मीठी नींद घुळी नैणा जद सुपणै में जाजम ढाळी।
नुई-नुई कूपळिया फूटी पात-पात डाळी-डाळी।।
सूती झिझक उठ् निदरा सू, करळ-झरळ काया करती।
जागी हाय मसळती रैगी गुटक-गुटक गुटक्या भरती।।
खळक-खळक नैणा रा मोती
ढळक-ढळक गोरी ढळकाती।
पिवसा नै पाती लिख भेजी
डुसक-डुसक डुसक्या भरती।।
खळक-खळक खळकी रे नदिया समद हबोळा लेवै रे।
भात-भात री उठे तरगा गजब झबोळा देवै रे।।
लड़ाझूम डाळ्या पर लुळती कलिया बोली अधखिलती।
डब-डब नीर-भरी पलका सू, छलक-छलक गगरी छलकी।।
खळक-खळक नैणा रा मोती
ढळक-ढळक गोरी ढळकाती।
पिवसा नै पाती लिख भेजी
डुसक-डुसक डुसक्या भरती।।
सावण मास सुरगो आयो माग-भरी मुळकै धरती।
लुकती-छिपती बाट निहारू बोलू नीं लाजा मरती।।
दादर मोर पपीहा बोलै कोयलड़ी टऊका करती।

तरस-तरस रैगी मनड़ै में हिचक-हिचक हिचक्या भरती।।
खळक-खळक नैणा रा मोती
ढळक-ढळक गोरी ढळकाती।
पिवसा नै पाती लिख भेजी
डुसक-डुसक डुसक्या भरती।।

हब्बीड़ो

झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
निरेताळ री झाटक राटक उड्डण दै हब्बीड़ो रे
बेली धीरो रे।।
खटक बसोलो रटक बजावै हळ थाटै खातीड़ो रे।
पीळै बादळ खेत पूगियो हळ लेकर हाळीड़ो रे।
भातो ले भतवारया हाली ले बळद्या रै नीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाडबड रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
फाटी–सी धोती अगरखी हूगी लीरो–लीरो रे।
रगत पसीनो धरती सींचै ओ लाडेसर कीं रो रे।
जीवत खाल तावड़ै बाळै ओ कुण मस्त फकीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
पेट पड्यो पातळियो खाली भूखो हळियो बावै है।
भूख–तिरस नै मार तपस्वी पच–पच खेत कमावै है।
उतर खालडी बाटा लागै जद आवै कातीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
हिमत राखज्ये मत घबराई दु:ख घणेरा आवैला।
अलख जगा खेता में बेली हीरा बिणज कमावैला।
आवैला मैणत कर बाळद लाख–लाख रो हीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।

मुरधर री धोरा धरती रो मीठो-ग़ुटक मतीरो रे।
टींबै माथै बैठ साथीड़ा कनक-काकड़ी चीरो रे।
खटमीठा काचर रसभीणा स्वाद अनोखो बीं रो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
निरेताळ री झाटक राटक उड्डण दै हाळीड़ो रे
बेली धीरो रे।।

हव्वीड़ो

झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
निरेताळ री झाटक राटक, उड्डण दै हव्वीड़ो रे
बेली धीरो रे।।
खटक वसोलो रटक बजावै हळ थाटै खातीड़ो रे।
पीछै बादळ खेत पूगियो हळ लेकर हाळीड़ो रे।
भातो ले भतवारया हाली ले बळद्या रै सीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
फाटी-सी धोती अंगरखी हूगी लीरो-लीरो रे।
रगत पसीनो धरती सींचै ओ लाडेसर कीं रो रे।
जीवत खाल तावड़ै बाळै ओ कुण मस्त फकीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
पेट पड़्यो पातळियो खाली भूखो हळियो बावै है।
भूख-तिरस नै मार तपस्वी पच-पच खेत कमावै है।
उतर खालड़ी बाठा लागै जद आवै कातीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
हिमत राखज्ये मत घबराई दुख घणेरा आवैला।
अलख जगा खेता में बेली, हीरा बिणज कमावैला।
आवैला मैणत कर बाळद लाख-लाख रो हीरो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।

मुरधर री धोरा धरती रो मीठो-मुटक मतीरो रे।
टीबै माथै बैठ साथीड़ा कचक-काकड़ी चीरो रे।
खटमीठ काचर रसभीणा स्वाद अनोखो बीं रो रे।
बेली धीरो रे।।
झटक झाड़बड़ रटक सूड़ पर बोलण दै भच्चीड़ो रे
बेली धीरो रे।
निरेताळ री झटक रटक उड़ण दै टाळीड़ो रे
बेली धीरो रे।।

मास बरसाळो आयो रे

बळद्या नै ललकारया बेली देखो ओ कुण जाय।
ठण्डी राता मारग बैता नाचै तेजो गाय।।
हाथ में ताण छतरड़ी कान नै पकड़ हिलायो।
प्रीत रा मीठा गावै गीत, बीन राग रिझायो।।
धरा पर सावण छायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
काळी कळायण ऊमटी रे बरसण लाग्या लोर।
इन्दर सिराणै आय धड़ूक्यो मीठा ही बोल्या मोर।।
सुण अम्बर गिरणायो जोर, मोरियो नाच-नचायो।
टिकै नीं धरणी ऊपर चरण छत्तर कर सोर मचायो।।
आभो लोरा छायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
टणमण बोलै टोकरा गाया री उछरी छाग।
हळियो ले करसलियो चाल्यो खेता खोजा टाग।।
किलोळ्या करै किलोळा देख बीच में कोई बड़ूक्यो।
गोरी ली गाया नै टोळ छाग साड धड़ूक्यो।।
गोरवैं सोर मचायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
अळगोजा घुरावण लागो धरी टाग पर टाग।
चादी रा घूघरिया जड़िया पड़ी सिराणै डाग।।
मस्त मौजीड़ो राग मल्लार घोळ रस पान करावै।
काळी-पीळी-धोळी धेन, दौड़ती लीलो खावै।।
निरख मन अजस आयो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
कोडीलै करसलियैं बैल्या हळ पर दीनो हाथ।
राजी हुयो रामजी ऊग्यो सोनै रो परभात।।
बळदियो हाको पूछ मरोड़ी रोज उठ भरो हाजरी।

करदै धोरा में भगवान मतीरा मोठ बाजरी।।
हुळस हियो भर आयो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
पड़ै तावड़ो मगरा माथै पसीनै रा खाळ।
रगत पसीनो एक हुयो, चोटी में उळगी झाळ।।
तावड़ै लाय उघाड़ो साव बळदिया जोत जुवाड़ो।
खेत में नर ऊभो पग रोप खवै पर धर कुवाड़ो।।
मैणत कर मोद रिझायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
पाथ-पाथ में भात-भतीली भणत पड़ै भणकार।
करसो करै निदाण खेत में जागी रे रणकार।।
निदाणै बाजर-मोठ गुवार सरड़ उठै सरड़ाटा।
कसिया आती-जाती खरड़-जरड़ बोलै जरड़ाटा।।
अम्बर ऊंच उछाळ्यो रे।।
मास बरसाळो आयो रे।।
सिटिया माथै कूकू छायो पीळा पड़ग्या खेत।
ईरड़ियै सिट्टा रो मोरण मीठो लागै सैत।।
काचर बोर मतीरा मेवा खेत नै सुरग बणावै।
धोरा री छबी निराळी निरख देवता मन ललचावै।।
अपसरा गीता गायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
लेय दातलो कड़बी ढूक्यो करळो कीनो रे।
पूग आवड़ी तोरै माथै हेलो दीनो रे।।
बेली आव बराबर देख घमक घूघर घमकावै।
आवड़ी बाध न्हावड़ी देख ठमक एडी ठमकावै।।
देख मन मिनखा भायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।
बहती दे फटकारा करसी आवै छाजलो देय।
करसो ऊपणै बाजरी करसी डुखळिया लेय।।
पीळी जरद बाजरी ढिगलो लाजड़ी राखी हरजी।
भरिया अन-धन सू भडार महर मालिक री मरजी।।
पसीनो सींच कमायो रे
मास बरसाळो आयो रे।।

❖

नणदल बाई रा बीरा म्हारे

नणदल बाई रा बीरा म्हारै झुटणिया घड़वादो ओ।
बिछुड़ा री जोड़ सोना री बगड़ी घड़वादो ओ।।
बोल घड़वादो – ओ भवर बन्ना
थारी गोरी ओ – घड़वादो ओ।।1।।

नैछो राख नारायण सुणलै खेता में हळ खड़िया अे।
सावण निपजै सातरो सोना री बगड़ी अे – घड़वादू अे।।
बोल घड़वादू अे – बाळक नैनी
भोळी बनड़ी अे – घड़वादू अे।।2।।

जैपुरियै जावो तो ढोला लहरियो मुलवाज्यो ओ।
काजळ वाळो कूपलो जड़ाऊ नथड़ी लेता आज्यो ओ।।
बोल लेता आज्यो – ओ भवर बन्ना
थारी गोरी ओ – लेता आज्यो ओ।।3।।

कालीसर रा मोठ बाजरी खेता ऊभा गोरी ओ।
पैली लेला लावणी कामणगारी ओ हठ लागी ओ।।
बोल हठ लागी ओ – बाळक नैनी
भोळी बनड़ी ओ – हठ लागी ओ।।4।।

दिवराणी नखराळी चाली कड़िया बाध कन्दोळो ओ।
पळको पड़ियो नींद नैणा उडगी ओ घड़वादो ओ।।
बोल घड़वादो ओ – भवर बन्ना
थारी गोरी ओ – घड़वादो ओ।।5।।

भाभीजी राज रै काठलो अैडी में पायल ठमकै ओ।
बाजूड़ाळी लूम्ब न्यारी ही लटकै ओ – घड़वादो ओ।।

बोल घड़वादो ओ – भवर बन्ना
थारी गोरी ओ – घड़वादो ओ।।6।।

पाणी रै पणघटियै भवरा गळै अडोळी जाऊ ओ।
मोसा बोलै डावड़्या लजवती गोरी ओ – घड़वादो ओ।।
बोल घड़वादो ओ – भवर बन्ना
थारी गोरी ओ – घड़वादो ओ।।7।।

भाई और भौजाई काका देखे माय'र–बाप ओ।
थोड़ी सुसता और कामणगारी ओ – हठ लागी ओ।।
बोल हठ लागी ओ – बाळक नैनी
भोळी बनड़ी ओ – हठ लागी ओ।।8।।

भोळी सूरत और लुभाणी नैण डोर उळझावै ओ।
डबडब भरिया नैण, डुसक्या भरती ओ – घड़वादो ओ।।
बोल हठ लागी ओ – बाळक नैनी
भोळी बनड़ी ओ – हठ लागी ओ।।9।।

मूढ़े मत मसकोड़ गोरड़ी, कौर कळेजै खाडी ओ।
दे फटकारो मोरड़ी मुरझा नीं मुखड़ो ओ – घड़वादू ओ।।
बोल घड़वादू ओ – बाळक नैनी
भोळी बनड़ी ओ – घड़वादू ओ।।10।।

❖

चला कुदाळो

बैवण दै लीलाड़ पसीनो चला कुदाळो हीं हो।
चूवण दै लीलाड़ पसीनो चला कुदाळो हीं हो।।
बेली बैवण दै
बेली चूवण दै।।
हू हुसियार कस्सी ले खाधै दै अम्बर उच्छाळो।
खाण गडी हीरा री ऊंडी दै धोरा उकराळो।
बेली हीं हो।।
डील उघाड़ो डाफर बाजै तनड़ो पड़्यो काळो।
आधी लारै मेह आवैला बाजण दै ऊनाळो।
बेली हीं हो।।
दात भींच करड़ी कर छाती थू काढै सीयाळो।
अेक अरब जनता रो साथी भारत रो रुखाळो।
बेली हीं हो।।
मैणत करतो काम करन्तो क्यू कोई सरमावै।
पीळै बादळ पूग खेत में मत–ना जीव लुकावै।
बेली हीं हो।।
धधो कर कीं छोड हथाया बोल हाथ के आवै।
थारी–म्हारी मत कर दिन–भर मिनख जमारो जावै।
बेली हीं हो।।
मैणत में साकार मूरती नारायण बण आवै।
च्यारू धाम खेत में थारै क्यू कठीनै जावै।
बेली हीं हो।।
बैवण दै लीलाड़ पसीनो चला कुदाळो हीं हो।
चूवण दै लीलाड़ पसीनो चला कुदाळो हीं हो।
बेली बैवण दै
बेली चूवण दै।।

टिकज्या टोटी

टिकज्या टोटी रामनाम झुकज्या नीचो रामनाम।
ढाळ गोडी रामनाम आव बराबर रामनाम।।

लेय पावड़ो दूक धोरा में
सोनै री करदै धरती।
भली करै भगवान-सावरो
कण-कण में निपजै मोती।।
धरती आज पसीनो मागै सींच पसीनो चाम-चाम।
देय पळेटो रामनाम आव बराबर रामनाम।।

रोटी रा देवाळ देस री
रैसी लाज पगा थारै।
खोला टाग हुज्या बेलीड़ा
आ बळद्या रै थू लारै।।
सुरग बणादै इण धरती नै निकळ पड़ो घर गाम-गाम।
मार झपट्टो रामनाम आव बराबर रामनाम।।

सूड़ अड़ै हळ पड्यो खेत में
घर ललकार कस्सी खाधै।।
पड़ी झाड़बड़ झाला देवै
पड़वै रै लटकी चांदै।।
मैणत रा मीठा बेलीड़ा खा रे रसीला आम-आम।
लागै रे मीठो रामनाम, आव बराबर रामनाम।।

कस्सी करयो बरणाट झाटकी
देख अबै म्हारो लटको।
होय फणा रै पाण सूड़ रे
मार जड़ा में रे झटको।।

सूड़ सजाड़ो देख आवड़ी खेत पुकारै काम-काम।
मार मुड़ासो रामनाम आव बराबर रामनाम।।

उठ मोट्यार हाल खेता में
अलख जगा धोरा-धोरा।
माथो टेक रेत में बेली
पड़ण तावड़ो दै मोरा।।
तीरथराज धोरा री धरती टीबै-टीबै धाम-धाम।
भिड़ज्या रे नेड़ो रामनाम आव बराबर रामनाम।।
टिकज्या रे टोटी रामनाम
झुकज्या रे नीचो रामनाम।
ढाळ गोडी रामनाम,
आव बराबर रामनाम।।

❖

जाग-जाग

जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डाळ-डाळ बादरा बजावै ताळी।।
घड़ी आई विकट सकट टाळी।
डावाडोल देस नै सभाळ हाळी।।

बिना रोक टोक गाव-गाव डोलैला।
बेईमान बादरा छुरया सू छोलैला।।
देर हुजावैला जद आख खोलैला।
कोयल री ठौड़ काठ उल्लू बोलैला।।
चेत-चेत फूलड़ा फफेड़ राळी।
गोरचो सभाळ भीम गोडी ढाळी।।
जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डावाडोल देस नै सभाळ हाळी।।

धरा दीखै धूधळी अधेरो छावै है।
सावधान सागड़ी तूफाण आवै है।।
कोजा बोलै काग मोर कुरळावै है।
भाग-भाग देस रो अभाग आवै है।।
घटाटोप रात घनघोर काळी।
लाली दीखै काजळी पूरब वाळी।।
जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डावाडोल देस नै सभाळ हाळी।।

मिटग्यो भरोसो खेत खावै अड़वो।
साव पोली भींतड़या पड़ैलो पड़वो।।
साच सदा बात रो सवाद कड़वो।
लाज लुटा बैन री मुळकै भड़वो।।

आपनै ही आप काड़ रियो गाळी।
काळी करतूता रो मिनख जाळी।।
जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डावाडोल देस नै सभाळ हाळी।।

पाप रो पहाड़ पुन्न राई हुग्यो रे।
मिनख रो मोल खोटी पाई हुग्यो रे।।
भाई नै भाई मारै काईं हुग्यो रे।
छुरी लेली हाथ में कसाई हुग्यो रे।।
नाव भवर-जाळ में डूबण वाळी।
सोच तरकीब हो बचण वाळी।।
जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डाळ-डाळ बादरा बजावै ताळी।।

फण कर साप तन डोल रियो है।
सपेरै री ताकत नै तोल रियो है।।
दाता बिच झागा नै झिकोळ रियो है।
विस वाळी पोटळी नै घोळ रियो है।।
दीखै कोनी बात है भरोसै वाळी।
फूका मारै मूडकी मसळ राळी।।
जाग-जाग बाग रा रुखाळा माळी।
डाळ-डाळ बादरा बजावै ताळी।।

❖

रूंई भाग री दड़ी

रूंई भाग री दड़ी खींचताण में पड़ी।
देस तो आजाद, रेत रोवै बापड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी,
आप-आप री पड़ी।।

जीवता जमदूत लारै दौड़ै दड़बड़ै।
सोटा आगै लोट-पोट, पार नीं पड़ै।
बन्द काळ-कोटड़ी में न्याय तड़फड़ै।
साच बात बोलता री जीभ लड़खड़ै।
चोट चादी री पड़ी जीव चळग्यो हड़बड़ी।
हाकमा री हाकमी, गुळाछ खा पड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी
आप-आप री पड़ी।।

साच झूठ रैंगा नै भेळा भच्चेड़या।
गवार री घट्टी में बोल गेहूं रैंद्या।
फळ-फूल पाखड़ा फफेड़ छोडया।
आजादी मिळी'क सूता भूल छेड़या।
गाव-गाव गड़बड़ी आख-आख लड़ पड़ी।
सोनैरो परभात दूर जीव री पड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी
आप-आप री पड़ी।।

भेख देख भूला पैला, जाच के पड़ै।
चदण रा तिलक तो सूख्या बाद ऊघड़ै।
योजना री ओट बिरथा नोट ऊजड़ै।
आजादी री रूखड़ी रा पानड़ा झड़ै।

जीत–हार में पड़ी, साव पोल ऊघड़ी।
कागजा में गोळमाळ योजना पड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी
आप–आप री पड़ी।।

अन्याय रोक–टोक रा जद भींतड़ा पड़ै।
आजाद लोग गैल छोड ऊजड़ा खड़ै।
आपसी में देस रा दीवाण खड़बड़ै।
रुखाळ लोकलाज रा किवाड़ कुण जड़ै।
गाडी ढाळ में गुड़ी जाय खाड में पड़ी।
रामजी धणी नरो में चूक सागड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी
आप–आप री पडी।।

रूड़ै भाग री दड़ी खींचताण में पड़ी।
देस तो आजाद, रेत रोवै बापड़ी।
बोल कुणा रै अड़ी
आप–आप री पड़ी।।

❖

थू बोल तो सरी

देस देखभाळ री, बाग रै रुखाल री।
झूठी था बिना गुजास साख क्यों भरी।
थू बोल तो सरी
जुबान खोल तो सरी।।
धान सड़ै कोटड़्या बाजार ऊळग्यो।
रासण री दुकान में सामान खूटग्यो।
सेठजी नै रात रा भगवान तूठग्यो।
मर गियो गरीब के ठा राम रूठग्यो।
धाप पेट नीं भरै भूख बापड़ा मरै।
आपरी क्यू नोटा सू, तिजोरिया भरी।
थू बोल तो सरी
जुबान खोल तो सरी।।
साहूकार नाम राल्यू, लूट जावणो।
है बडो खराब काळो चूट खावणो।
घूचळ्या ने छोड देख सूल चालणो।
पोछ नीं पड़ै तो सोच हाथ घालणो।
पैला हाथा भरी अब ढीली क्यू धरी।
बिन पगा में गाढ, माथै पोट क्यू धरी।
थू बोल तो सरी,
जुबान खोल तो सरी।।
ढग देख पाप रो, अकास फूटग्यो।
साच रो हियो अमूजै सास ऊळग्यो।
न्याय तो कचेड़िया सू, आज ऊळग्यो।
आयो सोई पोल देख पेड़ो पूटग्यो।
पच फैसला करै करता लाज नीं मरै।
न्याय री था बात नै लीलाम क्यू करी।
थू बोल तो सरी
जुबान खोल तो सरी।।

लाखू खावै रोज बा री कुण जोड़ दै।
रिपड़्या गरीब री तो नस मरोड़ दै।
भच्चीड़दार नै पकड़ै जाड़ तोड़ दै।
गरीबदास रा पुलिस हाड फोड़ दै।
चोरी कोई करै भरणो कोई भरै।
बापड़ै री खालड़ी, खराब क्यू करी।
थू बोल तो सरी,
जुबान खोल तो सरी।।
करम-धरम ताक में ऊचो धरीजग्यो।
राम जाणै पाप रो घड़ो भरीजग्यो।
छाती माथे लट्ठ ताण, लोभी ऊभग्यो।
खींच-ताण आपसी में देस डूबग्यो।
गीत रग गाळ में लोभ रग लाळ में।
अपग री था आतड़्या, निचोड़ क्यू धरी।
थू बोल तो सरी
जुबान खोल तो सरी।।
नोट चोट लोटपोट अपूठ फोरिया।
ठाठ-बाट चाट लागी, घूसखोरिया।
सो गयो कठै थू राम, ऊडी ओरिया।
देख भेख ओट में करै अै चोरिया।
लोग बोलता डरै चोर चूरमा करै।
जवाब दो किया कियो था चोर नै बरी।
थू बोल तो सरी,
जुबान खोल तो सरी।।
देस देखभाळ री बाग रै रुखाल री।
झूठी था बिना गुजारा साख क्यों भरी।
थू बोल तो सरी,
जुबान खोल तो सरी।।

पड़दै रै भीतर

पड़दै रै भीतर मत झाकी,
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी,
जीवण में गाठ्या घुळ जासी।।

थू जाणै कितरा देख अठै बैठा है मूड मुडायोड़ा।
थू जाणै कितरा देख अठै बुगला नर भेख बणायोड़ा।
थू जाणै कितरा देख अठै मठधारी तिलक लगायोड़ा।
बैठा कितरा अवधूत अठै, तन माहीं राख रमायोड़ा।
भगत री भगती नै मत देख,
धरम री धज्जिया उड जासी।
पड़दै रै भीतर मत झाकी,
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।।

पीछै पड़दै री छाया में, थू जाणै छळ री माया है।
दस तेरा कै बीसा पथी, थू जाणै सब उळझाया है।
गाभा में सैंग उघाड़ा है, हर पाव तिसळता पाया है।
मिनखा नै काई दोस अठै, बे-देव लुढ़कता आया है।
जम्योड़ी रजी मती उड़ाय,
पेड़ री जड़ा उखड़ जासी।
पड़दै रै भीतर मत झाकी
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।।

भींता भीतर सू खोळी है, ऊपर तो रग रचोळा है।
चोळा तो ऊपर का खोळा, भीतर लै समद हबोळा है।
देख्या सू घण पिसतावैलो कीं नहीं पोल का गोळा है।
सागर री लैरा देखी पण, भीतर किण नै टटोळा है।

म्हाकी मानो तो गाधीजी

म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

गाधीजी म्हारा राम-राम, था हाथ जोड़ कर बाचीज्यो।
म्हाका तो करम फूट्या है था सोच-फिकर मती करज्यो।
ओरू भारत री जनता रा आगै कागद में बाचीज्यो।
म्हे सुणी है थांरै आवण री, धरती पर पग मती धरज्यो।
आयो काई था भूल गिया ऊपर बैठा ही देखीज्यो।
पैला री बाता याद राख आगै री बाता सोचीज्यो।
घर-घर बैठा है गौड़ अठै दूजा नै दोस मती दीज्यो।
के सिट्टो काढस्यो आय अठै, बेगा ही मत-ना भूलीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी, भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

था नै म्हू काई समझाऊ, करमा नै देवा ठेला हा।
काळ री चरखी पीलीजा व्हैग्या हा साव अधगैला हा।
मरग्या जका नै रोवा हा, जिन्दा नै आगै ठेला हा।
इण में झूठ मत जाणीज्यो, क्यूकै थारा ही चेला हा।
साचाणी अब आजादी रा डण्ड-कमण्डळ उठैला।
गिणिया दिना में सुण लीज्यो आपस में करम फूटैला।
पैला री बाता री कोनी, था ठण्डै दिमाग सू सोचीज्यो।
थाकी कोई नीं सुणैला भोकळा ऊभा बोकीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा थाकी के हालत है लिखज्यो।।

म्हाकै तो लेख अबार अठै घर-घर रासण रा रोळा है।
भूखा मरता रा गाधीजी पड़ गिया हाडका खोळा है।

सोनै रो झोळ उतरता ही,
ठाकुरजी पीतळ रळ जासी।
पड़दै रै भीतर मत झाकी,
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।।

धरम री चादर ऊपर ताण, सूता कुण मौजा माणै है।
कुणीं नै नीत बिगाड़ी देख, कुणा रो जीव टिकाणै है।
करै कुण किरतब काळी रात बा नै के थू नहीं जाणै है।
हवा में खोज मंडे बिण रा पागी थू पग पिछाणै है।
भेद री बाता नै मत खोल
पोल रो ढोल बिखर जासी।
पड़दै रै भीतर मत झाकी
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।।

आप री अपणायत नै देख अणेसो मन में आवैला।
थारा नै निजरा सू निहार घिरणा सू नाक चढावैला।
परवाड़ा बाच्या जे पाछा नैणा री नींद उडावैला।
चालै ज्यू चालण दै चरखो आख्या री सरम गमावैला।
जीवण सू मती करी खिलवाड़
कागदी फूल बिखर जासी।
पड़दै रै भीतर मत झाकी
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।।

पड़दै रै भीतर मत झाकी ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी।
ढक्योड़ो भरम उघड़ जासी जीवण में गाळ्या घुळ जासी।।

••

म्हांकी मानो तो गांधीजी

म्हाकी मानो तो गाधीजी, भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

गाधीजी म्हारा राम-राम था हाथ जोड़ कर बाचीज्यो।
म्हाका तो करम फूट्ग्या है, था सोच-फिकर मती करज्यो।
ओरू भारत री जनता रा आगै कागद में बाचीज्यो।
म्हे सुणी है थांरै आवण री, धरती पर पग मती धरज्यो।
आवो काईं था भूल गिया, ऊपर बैठा ही देखीज्यो।
पैला री बाता याद राख आगै री बाता सोचीज्यो।
घर-घर बैठा है गौड़ अठै, दूजा नै दोस मती दीज्यो।
के सिट्टो काढस्यो आय अठै बेगा ही मत-ना भूलीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा थाकी के हालत है लिखज्यो।।

था नै म्हू काईं समझाऊ, करमा नै देवा हेला हा।
काळ री चरखी पीलीजा व्हैग्या हा साव अधगैला हा।
मरग्या जका नै रोवा हा जिन्दा नै आगै ठेला हा।
इण में झूठ मत जाणीज्यो क्यूकै थारा ही चेला हा।
साचाणी अब आजादी रा डण्ड-कमण्डळ उठैला।
गिणिया दिना में सुण लीज्यो आपस में करम फूटैला।
पैला री बाता री कोनी था ठण्डै दिमाग सू सोचीज्यो।
थाकी कोई नीं सुणैला मोकळा ऊभा बोकीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा थाकी के हालत है लिखज्यो।।

म्हाकै तो देख अबार अठै, घर-घर रासण रा रोळा है।
भूखा मरता रा गाधीजी पड़ गिया हाडका खोळा है।

अब तो म्हे लोग ही बेगा ही थाँरै कनै ई आवा हा।
कारण सतभेळ्यो धान जको वो भी पातरै पावा हा।
भैंस्या रै बाटो हुवै जिस्यो अन्न बारे सू लावा हा।
वो भी भरपेट मिळै कोनी मरतोड़ा फास्या खावा हा।
रोटी रै बदळै आग्या तो, घर बैठ उबास्या खाईज्यो।
राया रै भोळै गाधीजी मिरचा रा बीज चबाईज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

गाधीजी था कै गिया पछै घणकरा तरक्की करली है।
कानून जेळ में पड्यो सिड़ै, जेबा रिस्वत सू भरली है।
पोपाबाई रो राज अठै आधिक तो जनता मरली है।
चौथाई तड़फा तोड़ रही माचै री ईस पकड़ली है।
साची पूछो तो बापूजी अठै रोकड़चन्द री चल्लै है।
थाका'ळा सुपणा अधमरिया, माचै में पड़िया हिल्लै है।
औ हाल है अठै बापूजी कागद नै सावळ पढ लीज्यो।
म्हू बात बणाय लिखी कोनी था साची-साची सुण लीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी, भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

जवान आजकल भारत में दुनिया में पैलै नम्बर है।
माथै रा खोता खुसियोड़ा नीचानी झुकगी कम्मर है।
पाख्या खुसियोड़ा पछी ज्यू, मूढा लेप्योड़ा डम्मर है।
खावण नै भूख-भचेड़ा है ओढण नै ऊपर अम्बर है।
मूढा खायोड़ा ताप देख गोडा में रीळा चालै है।
समसाण गाव सू दूर पड़ै मुड़दा नित फोड़ा घालै है।
मिळ जासी था नै काम घणो मुड़दा बाळण में जुट जाज्यो।
दिन-भर जद खाधो तप जावै भूखा जा घर में सो जाज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा थाकी के हालत है लिखज्यो।।

म्हाकै तो अठै झूठ अबार चोखी-सी चादी कूटै है।
साचै रो हाथ फुरै कोनी डरती रो काळजो उठै है।
थाकै मिनखा रा माथ बठै के भाव बजारा भट्कै है।
म्हाकै तो रुपिया रै साटै, लेता कोई ना अट्कै है।

टेसण-टेसण माथै ऊभा, आढतिया गाडी अटकै है।
थे आवो थाकै छापै रा, भारत रा नोट बटा लीज्यो।
जे पीसा हुवै नीं अण्टी में अट्टीनै मूढो मत कीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी, भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

इण बेळा म्हाकै माथै तो, पाड़ौसी देस बटीजै है।
च्यारु कानी सू रोजाना, म्हाकी तो टाट कुटीजै है।
बो रोळो पाकिस्तानाळो, था छोड्यो ज्यू ही चालै है।
अर चीण बापड़ो हाथा ही माथा में धूड़ो घालै है।
नित-नूवा आई साल अठै बापूजी रोळा चालै है।
भूला सू बाथ्या आवा हा, मरियोड़ा फोड़ा घालै है।
था आय अठै क्यू बापूजी, आ ढाढा भेळा ठरडीजो।
जिया-तिया ही सुख-दुख में सूता-सूता थे सुण लीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

पूछो मत स्यान बिगड़गी है, जीवण में धूड़ा-धाणी है।
इज्जत करजै में कळियोड़ी, लोगा रै पड़ी अडाणी है।
नेहरूजी बाता की व्हैला था सू काई छानी है।
गुमा घणकरी दीनी हा बाकी रुपिया में आनी है।
बरबादी ही बरबादी है, कीं आणी है ना जाणी है।
आखिर तो जद-कद गाधीजी, म्हा नै तो फास्या खाणी है।
इण मिनखजूण सू बापूजी बस पड़ै सदा बचता रीज्यो।
थे तो मिनखा नै जाणो हो, गोळ्या-घावा भरता रीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

मर गिया बापड़ा इजतदार मुख घाल घड़ै में रोवै है।
जब्बर आई है आजादी मिनखा रो रगत बिलोवै है।
चिमटी आटै रो भेळ नहीं सब साव लूण री पोवै है।
ईश्वर भी आख्या मींच खड़्यो डरतोड़ो जीव लुकोवै है।
करै नीं कोई चुसकारो, हर भार जिदगी ढोवै है।
गाधी री बेटी आजादी नागी सड़का पर सोवै है।
आवोला धोखो खावोला मन पछी नैं समझा लीज्यो।

सोया जे नींद नहीं आवै, कोइ करा दवा-दारू लीज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा थाकी के हालत है लिखज्यो।।

जे आज दिना थे गाधीजी भारत में जिन्दा रह जाता।
रोटी रै खातर साचाणी खुरड़ा खोतरनै मर जाता।
आजाद हुयोड़ा लोग अठै मूछ्या नै पकड़्या मचकाता।
थाकी सोगन है गाधीजी, बिगाड़ालू बाथ्या पड़ जाता।
चेला रा नाटक देख-देख थाका तो भापण भुव जाता।
थे लखता सुपणा आवै है, ऊभा आख्या नै झमकाता।
म्हू तो यू ही लिख दीनो है था मन में गुटक्या मत भरज्यो।
सिगळी बाता नै सोच-समझ धरती रै माथै पग धरज्यो।
म्हाकी मानो तो गाधीजी भारत में भूल'र मत आज्यो।
म्हे तो मर-मर कर जीवा हा, थाकी के हालत है लिखज्यो।।

❖

सुणज्यो नेताजी

भूखा मरता मिनखा री, पासळिया चिपगी ओ
सुणज्यो नेताजी।

भूखा सोवा भूखा उठा पापी पेट बोलै ओ।
रीसा बळतो गुपत घर रो, भेद खोलै ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
जनता ऊभी रोवै सारी मरबा खातर चाली ओ।
आप कींकर काना में आगळिया घाली ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
हाका कर-कर हेला मारा, रो-रो पलका गळगी ओ।
महगाई में बिन आया जवानी ढळगी ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
सोनो तो सुपणों बण रहग्यो चादी पड़गी गोडा में।
देस नै अडाणै धरद्यो कर-कर होडा में।
सुणज्यो नेताजी।।
तेल नै भैरूजी पीग्या धान धरती गिटगी ओ।
खाण-पीण री चीजा माथै, पड़गी पटकी ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
बिना बादळ बिजळी गरीबा माथै कड़की ओ।
मिनखा रै जीवण री सब, उम्मीदा मिटगी ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
आजादी रै ब्याव में चोरा री जान आई ओ।
ठग तो आया माहैरै पल्लै नहीं पाई ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
पाट्या पळता आजादी चवरया में राड हूगी ओ।
जिण-जिण नै धणिया बिन सूनी लोगा भोगी ओ।
सुणज्यो नेताजी।।

गरीबी मिटज्या फटकारै मारो झटपट झटको ओ।
शेला कर सिगला न मांथै बम्ब राळो ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
झुपड़िया सूं छाटा लेवै बारा महल छूटै ओ।
पाप सूं भरियोड़ा आखिर घड़िया फूटै ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
काम पड्या जनता रै काटा चींचड़ ज्यूं चिप जावो ओ।
गरज मिटी अर पाच बरस नेड़ा नीं आवो ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
तसगरिया नै पकड़ण वाळा तसगरिया रा बाप ओ।
रात-दिवस नग्गद नारायण जप्पै जाप ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
भुवा सूं था चोर मराओ चोर भुवा रा भाई ओ।
थे बैठा दिल्ली में म्हारी मौत आई ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
डाक्टर अर कपोडर सारा पग लिछमी रा सेवै ओ।
मरीज पड्या माचै में रोवै पल्ला लेवै ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
रासन में विदेसी धान देसी कींकर काकरियो।
रात नै रळाय देवै चोर खापरियो।
सुणज्यो नेताजी।।
चेत सको तो चेतीज्यो विकराळ आंधी आवै ओ।
आजादी रो ब्यावलो कल्पित कथ गावै ओ।
सुणज्यो नेताजी।।
भूखा मरता मिनखा री पासळिया चिपगी ओ।
सुणज्यो नेताजी।।

थू सोयग्यो जाय कठै

चौड़ै-धाड़ै ढोल-नगाड़ै
लाज लूटलै आज अठै
थू सोयग्यो जाय कठै।

जलमहार सौदागर बण जद बोली देतो नीं सरमावै।
स्वारथ री दुनिया में डूबी मा खुद ही जद भाव बतावै।
भाई निरखै नैण निजारा बापू मरदग ताल बजावै।
सुसरो वैद कुठोडा खाग्यो लाजा मरती काई बतावै।
धरम डूबग्यो सुण सावरिया
पाप पसरग्यो देख अठै,
थू सोयग्यो जाय कठै।

मिनखा में मिनखापण कोनी तनिक लोभ-लाळ में मरग्या।
बोझ मरै पापा सू धरती कपटी चोर जुआरी रहग्या।
करता बात पडू लजकाणो मिनख जका लाखीणा मरग्या।
इज्जत रा रुखवाळा ही जद आख्या मीच अंधेरो करग्या।
आता-जाता सुण-सुण बाता
हिवडै माहीं होड़ उठै
थू सोयग्यो जाय कठै।

पण्डतजी परखै परनारी गीता ग्यान ताक में धरग्या।
माथै ऊपर लोग-दिखाऊ खाली तिलक चनण रा रहग्या।
जा मन्दिर में धरम उठालै पत्थर रा ठाकुरजी रहग्या।
अकरम करता नीं सरमावै किरतब देख रामजी डरग्या।
धरमाथल में भगतण नाचै
सुण थारो ही कुरब घटै
थू सौयग्यो जाय कठै।

अबला रा आसू घणमूघा मोती मोल रेत में रळग्या।
सुपणै रा ससार सजाया कागद रै पांटै ज्यू गळग्या।
बागा रा रुखवाला जागी के काना रै ताला जडग्या।
निरभै कींकर नींद घुरावै बाड़ा जुरड़ गधेड़ा बड़ग्या।
साई थारा चेला-चाटी
बात गमावै नाक कटै
थू सोयग्यो जाय कठै।

लुच्चा मौज गरीबा फासी चोर-चोर मौसेरा मिळग्या।
रुळा-खुळा अै भात-भात रा खाप-खाप रा भेळा भिळग्या।
काई मिनख घड़ै बेमाता सतजुग रा के साचा बळग्या।
भार सासड़ी सहता-सहता सुण छाती रा छोडा जळग्या।
माटी रा रामतिया बणग्या,
मिनख देखलै आज अठै
थू सोयग्यो जाय कठै।

थू जे सिरजनहार जगत रो परळै बोल करणियो कुण है।
थू जे राम मौत नीं बगसै मन सू बोल भरणियो कुण है।
थू राधा री माग भरणियो मगसी माग करणियो कुण है।
थारी रमत बिगाडे बिण रो खाली पेट भरणियो कुण है।
मारण-तारण वाळो थू ही
देवा कुण नै दोस अठै
थू सोयग्यो जाय कठै।

चौड़ै-धाड़ै ढोल-नगाड़ै लाज लूटलै आज अठै।
थू सोयग्यो जाय कठै।।
❖

भाई रो भाईपणो

देखल्यो हजार बार भाई रो भाईपणो।
मन में विचार और, मूंढै पै मीठापणो।
पेट में खोटापणो
भाई रो भाईपणो।।

राखड़ी बधावै हाथ धरम धीज नेम है।
भाई वण वैण नै दगो विचार बेच दै।
खारा जाण आपणो ही रात घर रहण दै।
लूट-मार खोस-पीट कण्ठा छुरी फेर दै।
जीम्यो जीं थाळी में छेद सैण रो सैणापणो।
नीत में फरक पड़ग्यो फैलग्यो धोखापणो।
देखल्यो हजार बार
भाई रो भाईपणो।।

सुहाग रो सिंदूर मा-वैण रो लूटो मती।
अपग री रोटी री कोर हाथ सू खोसो मती।
मिनख नै मिनख जाणो रगत नै चूसो मती।
बुद्ध री कचेड़िया में न्याय नै भूलो मती।
रावण! लूटो मती थे सीता रो सीतापणो।
राम री धरा पे किया आयग्यो ओछापणो।
देखल्यो हजार बार
भाई रो भाईपणो।।

बात में मीठास लावै कूड़ में कपट घोळ।
बाणी रा सुप्यार मीठा सबद काढै तोल-तोल।
गुड़जा पलक माय पींदे रा पत्तिल गोळ।
नींद में अचेत जाण पोल में बजावै ढोल।

गुरु ने बतावै हाथ चेला रो चेलापणो।
ओ किया मिनेला आव छैल रो छैलापणो।
देखल्यो हजार बार
भाई रो भाईपणो।।

साच सङे जेळ में करदी बन्द बोलणी।
झूठ तो खुल्ले बाजारा चौड़े-धाड़े ऊंलणी।
फैलग्यो भतीजवाद डूबगी पचा तणी।
पीठ देता पाण पड़ग्यो आतरो भूलापणी।
धोळो-धोळो दूध जाणै है कितो भोळापणो।
दुख में पुकार देख कुण परायो-आपणो।
देखल्यो हजार बार
भाई रो भाईपणो।।

भूख नींद तिस मार तिल-तिल कटणो।
देस नै आजादी दीनी रगत सींच आप्पणो।
पेट रै पिलाणिया ह्, खाँडै नीचै खप्पणो।
बापू री उदारता अर आपा रो भलापणो।
नीचता री हद हूगी काई धन बाटणो।
गोळी री लपक्क मारी कोई भाई आपणो।
देखल्यो हजार बार
भाई रो भाईपणो।।

देखल्यो हजार बार भाई रो भाईपणो।
मन विचार और मूंढै पे मीठापणो।
पेट में खोटापणो
मूंढै पे मीठापणो।।

आभो सींवां ही किया

सूकी में पायोड़ा प्राण जीवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

जगळ में आग लागी
बिल में निवास है।
कुणसी अब बाकी
बचणै री आस है।
सास घुटै माय बारै आवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

काई पडूत्तर देवै
पूछलै सवाल रो।
धणी बण बैठो जिया
कोई चोरी माल रो।
ताळवै रै जीभ चिपगी कैवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

नित नूवा होता रिया
घाव माथै घाव है।
डूबतोड़ा झपा म्हारा
लागै कोनी डाव है।
घावा में भाला रा घोबा सहवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

हिवड़ै री पोळ माथै
सवाला री भीड़ है।
दरद असीम तन
काळजै री पीड है।

कण्ठा पर करौती चालै रोवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

भरियो अथाग गहरो
ऊडो समन्द है।
पग धरै माय जिण नै
मरणो पसन्द है।
दीखतो आख्या सू जहर, पीवा ही किया।
फाटै गाभै कारी, आभो सींवा ही किया।।

अधरबम्ब बीच लटक्या
मामलो है सोच रो।
नाव मझधार हुग्यो
पींदै माहीं कोचरो।
नाक ताईं डूब्या सास, लेवा ही किया।
फाटै गाभै कारी आभो सींवा ही किया।।

सूळी में पोयोड़ा प्राण
जीवा हीं किया।
फाटै गाभै कारी
आभो सींवा ही किया।।

❖

थोड़ी-सी जिंदगाणी में

काया-माया बादळ छाया
खोज मिटै ज्यूं पाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी
थोड़ी-सी जिदगाणी में।।

नदी किनारै पाव पसारया रीजे मत-ना भोळै में।
है कितरी औकात बावळा जासी पैल हबोळै में।
बिरथा गाल बजावै झूठा, फस कर झामरझोळै में।
अधबिच रामत छोड अधूरी
पलक झपे उठ जाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी
थोड़ी-सी जिदगाणी में।।

आख्या मींच अपूठो दोड़ै लारै खाडा कावळ है।
सावचेत हू पग धर करणी कोनी ठीक ऊतावळ है।
सोनै रा डूगर मत जाणी अळगा जितरा सावळ है।
चेत रेत में रळ जावैला तिलक माथला चावळ है।
हाथ मसळतो रह जावैला
कीं नीं आणी-जाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी
थोड़ी-सी जिदगाणी में।।

बड़सी कुणसी जाय बाड़ में लुकसी कुणसी खाळी में।
हीयै माहीं फेर कागसी आसी अटक दताळी में।
भौ-भौ भटक बारणै आयो रहग्यो करम खुजाळी में।
ठाणै पूग भुवाळी खाई फसग्यो फेर पजाळी में।

लख चौरासी फिरो भटकता
फेर पिलीजो घाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी
थोड़ी-सी जिदगाणी में।।

माया-मद में भूल मती मन रहणो ठौड़-ठिकाणै में।
पाव रती सा'रो नीं लागै आया पछै निसाणै में।
घाणी-माणी खींचा-ताणी जीवण जग उळझाणै में।
चेत मुसाफिर कीं नीं पड़ियो गाठ घणी धुळाणै में।
कुण जाणै किण टैम बुलावो
आ जावै अणजाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी
थोड़ी-सी जिदगाणी में।।

काया-माया बादळ छाया खोज मिटै ज्यू पाणी में।
मिनखजमारै विस मत घोळी थोडी-सी जिन्दगाणी में।।

❖

मन घोड़ो बिना लगाम रो

कुण जाणै किण टैम बदळज्या
कौडी एक छदाम रो
मन घोड़ो बिना लगाम रो।।
काया नै घर में पटक-झटक घूमै मौजी असमाना में।
कुवदी लाखों उतपात करै, सूतै रै धरज्या काना में।
म्हू ढूंढू बाग-बगीचा में ओ छाणै राख मसाणा में।
हैरान करै काया कळपै लाधै नीं पलक ठिकाणा में।
दौड़े हड़बड़-दड़बड़ करतो
है भूखो खाली नाम रो
मन घोड़ो बिना लगाम रो।।
उळझ्यो जाळा-उळजाळा में आभै में उडतो अटक गियो।
दुनिया रै गोरखधधै री लोभी लाळा में लटक गियो।
भावा रै समन्द-हबोळा में तिरसूळ हियै में खटक गियो।
अळिया-गळिया घुचळिया में मारग में बैतो भटक गियो।
मस्त हसै रोवै पल में
कुण लेवै नाम निकाम रो
मन घोड़ो बिना लगाम रो।।
निचलो नीं रैवै अेक पलक मस्तानो हाथी मचळ गियो।
लाड लडाता खाट गाय ज्यू, हाथ फेरता उछळ गियो।
गुड़तो-पड़तो ऊचो-नीचो पग पड़्यो चीखलै तिसळ गियो।
पग बाध पटक ताळा जड़िया घर फोड़ पिछाड़ी निकळ गियो।
काम-वासना कूड़-कपट मन
हरदम बसै हराम रो
मन घोड़ो बिना लगाम रो।।
कुण जाणै किण टैम बदळज्या कौड़ी एक छदाम रो
मन घोड़ो बिना लगाम रो।।

जीवण-रस री धार में

जिको मिळै नीं जीवण-भर में
मिळ जावै पल प्यार में।
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।

सिरजनहार एक है सब रो सूरत न्यारी-न्यारी है।
ऊच-नीच रो भेद छोड करता सब री रुखवारी है।
बाग-बगीचा जाय देखलै, भात-भतीली क्यारी है।
रग-बिरगा फूल खिल्योड़ा सब मिळकर फुलवारी है।
एक तार में पोया लागै
मोती सुन्दर हार में।
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।

काज-पाज है अलग-अलग सुख-दुख रा सब झेलू है।
कहदा बात पकी बा समझो पाछी नहीं उथेलू है।
राम-रहीम ईश्वर या अल्ला रुपियै रा दो पैलू है।
कड़ी लड़ी सू जुड़ी हुई है सब रा सबध घरेलू है।
हिन्दुस्तान सरीसो दूजो
मुलक नहीं ससार में।
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।

एक गगन री छाया नीचै धरती सब री माता है।
भेद-भाव रग छोड चन्दरमा सब पर रस बरसाता है।
बारी-बारी मौसम सब पर इक-सा रग जमाता है।
पवन पवित्तर ठण्ड-हिलोरा सब का मन हरसाता है।
जीव मात्र की सेवा करता
रती नीं भेद विचार में
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।

मजिल पर पूगण रै खातर धरम तो पगडडिया है।
मिनख-मिनख में भेद पटकणो पण्डा री पाखडिया है।
कपड़ो एक ही है पण रगली भात-भात री झडिया है।
एक चीज रो अलग-अलग सब भाव बतावै मडिया है।
झासै में मत आज्यो कोई
डूबोला मझधार में।
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।
मोहम्मद नै जो अलख जगाई राम बो ही वनवासी है।
सिगळा धरम बरोबर अठै कोई नहीं उदासी है।
मन्दिर-मस्जिद मका-मदीना, कोई जावै कासी है।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सिगळा भारतवासी है।
एक खदेड़ै री माटी सब
फरक पड़ै क्यू प्यार में।
जात-पात रो विस मत घोळो
जीवण-रस री धार में।।
अपणै हित स्वारथ रै खातर जे कोई मिनख मरावैला।
सुख शान्ति अर खुशियाळी में जे कोई टाग अड़ावैला।
भारत अखण्ड अेकता माथै पर कोई आख उठावैला।
चीर फेंकदा काढ काळजो आख फोड़ दी जावैला।
सीधी-सणक देख मत लाडी
धार तेज दुधार में।
जात-पात रो विस मत घोळी
जीवण-रस री धार में।।
जिको मिळै नीं जीवण-भर में मिळ जावै पल-प्यार में।
जात-पात रो विस मत घोळो जीवण-रस री धार में।।

❖

ढळती छाया है

जीवण जग-जजाळ
जगत सुपणै री माया है।
बीत गये दिन ढळते-
दिन री ढळती छाया है।।
हाट-हाट पर ठग सौदागर लाग्या ठीक ठगाई में।
गहळ नसै में घणा ठगीज्या जीवण-बिणज कमाई में।
करम कमाई घाटो लागो
मूळ गमाया है।
बीत गये दिन ढळते-
दिन री ढळती छाया है।।
हरख्या निरख्या नैड़ा सिरक्या हिवड़े री अळिया-गळिया।
चख-चख कर टोळी सू टळग्या लोग बतावै आगळिया।
प्रीत तणी पत गई जगत रा
लोग हसाया है।
बीत गये दिन ढळते-
दिन री ढळती छाया है।।
बदळ गई पतवारचा सागण खेत बदळ गिया हाळी।
बाग-बगीचा ठौड़-ठिकाणै रूख बदळ गिया माळी।
टोळी रा पछीड़ा टळग्या
चित भरमाया है।
बीत गये दिन ढळते-
दिन री ढळती छाया है।।
गळो भरीजै नाम लेवता सुर बिन गीन किया गाऊ।
बळती सासा नैण उबळग्या मर-मर जगत जिया जाऊ।
पलका री गागर में सागर
जळ भर आया है।
बीत गये दिन ढळते-
दिन री ढळती छाया है।।

•

सवारतां-सवारता

सवारता-सवारता सौ बार हो गई।
जिदगाणी लीर तार-तार हो गई।।

जाण-अणजाण री पिछाण खूटगी।
खाज खिणता आगळी सू आख फूटगी।
खींच्या पैली डौर नै कबाण टूटगी।
खाली पड़ी खणक बन्दूक छूटगी।
खार-खार मार मन हार हो गई।
सवारता-सवारता सौ बार हो गई।
जिदगाणी लीर तार-तार हो गई।।

एक तीर आखिरी रियो कबाण में।
टूट गियो तटकै भरे मैदान में।
मर गियो कानिया झूठै ऊफाण में।
आग दे कोई नहीं नजर मसाण में।
ब्याज-टर-ब्याज करजदार हो गई।
तेज रफ्तार मझधार हो गई।
सवारता-सवारता सौ बार हो गई।
जिदगाणी लीर तार-तार हो गई।।

रात अधियाळी परभात धुधळी।
मौत खड़ी बारणै पे साकड़ी गळी।
छिया सू डर लागै मची खळबली।
छाछ फूक-फूक पीवै दूध सू जळी।
डरवाळी दौड़ सू तो पार हो गई।
घर के मकान में सिकार हो गई।

सवारता-सवारता सौ बार हो गई।
जिदगाणी लीर, तार-तार हो गई।।

आजाद उडतै पछी रै मार पख पर।
घायल-सो करद्यो बेहाल ढग कर।
पूछती खड़ी है भीड़ हर मकान पर।
लगाम-सी लगाय दी कोई जुबान पर।
बोलै न चालै बीमार हो गई।
मरण-जीण इकसार भार हो गई।
सवारता-सवारता सौ बार हो गई।
जिदगाणी लीर तार-तार हो गई।।

❖

कानदान 'कल्पित' उजास रा आगीवाण कवि है। राजस्थान में अर राजस्थान रै बारै जठै-जठै राजस्थानी समाज रैवै, कानदान री कवितावा री माग बरोबर वणी रैवै। माझल रात सू लेय'र झाझरकै ताईं लोग जे अेक ई कवि री कवितावा सुण रैया हुवै अर फेर भी धाप नीं आय रैयी व्है जो उण कवि रो अेक ही नाव हुय सकै - कानदान 'कल्पित'। मुरधर रै मीठै गुटक मतीरै जिसी कवितावा, कनक-काकडी रै स्वाद जिसी कवितावा, सावण री झडिया बिच्चै बरसात री घटा जिसी कवितावा अर लूम्बा-झूम्बा ढोला रै ढमकै आयोडै फागण री रगत जिसी कवितावा सुणता रैवो - सुणता रैवो। नीं तो स्रोता आखता हुवै अर नीं कवि थाकै। रात धुळ जावै पण तिरस वणी रैवै। कानदान कणाई लोगा नै हसावै तो कणाई देसप्रेम रै भावा रो सचार झबळका देवै, कणाई सिणगार रा साज सजावै तो कणाई मौसम री मनवारा करै, पण जद वै 'सीखडली' उगेरै तो बाईसा रा नैण ई नहीं, स्रोतावा रा नैण भी डब-डब भर जावै। कानदान कल्पित कविता रा जादूगर है। जादू रो असर तो फेर भी थोडी जेज ही रैवै पण कविता रो असर अखी हुय जावै।